परमाणु हथियारों का विरोध

ICAN

सन् 26 में अंतर्राष्ट्रीय परमाणु हथियार उन्मूलन अभियान (ICAN) द्वारा प्रकाशित।
लेखन: टिम राइट। चित्र: गेब्रियल सिल्वेरा । वेबसाइट: टेक्टोनिका । हिंदी अनुवाद: शैलेन्द्र।

TPNW के समर्थन में ओस्लो, नॉर्वे में एक मशाल जुलूस। साभार: क्रिस्टियन लेमले-रफ

परमाणु हथियार मानवता और हमारे ग्रह के लिए एक गंभीर और बढ़ता हुआ खतरा हैं। उनका उन्मूलन एक अत्यावश्यक कार्य है।

दुनिया के अधिकांश देश इस लक्ष्य के प्रति दृढ़ता से प्रतिबद्ध हैं, और वे 2021 में लागू हुई ऐतिहासिक परमाणु हथियार निषेध संधि में शामिल हैं।

लेकिन नौ देशों के पास अभी भी सामूहिक विनाश के ये आत्यंतिक हथियार हैं, जो नए अंतरराष्ट्रीय मानदंड और अपने नागरिकों की इच्छा की अवहेलना करते हैं। हर साल, वे अपने शस्त्रागार को उन्नत और विस्तारित करने में अरबों डॉलर बर्बाद करते हैं।

आजकल परमाणु हथियारों की खतरनाक होड़ चल रही है, और परमाणु हथियारों के इस्तेमाल का ख़तरा – चाहे जानबूझकर हो या दुर्घटनावश – आज उतना ही अधिक है जितना पहले कभी था। हम हर समय वैश्विक तबाही से बस एक गलत फ़ैसले की दूरी पर हैं।

परमाणु हथियारों से होने वाले अभूतपूर्व नुकसान को रोकने के लिए, सरकारों को उन्हें खत्म करने के लिए तत्काल कार्रवाई करनी चाहिए – जो उनके आगे के उपयोग और परीक्षण के खिलाफ एकमात्र गारंटी है।

लेकिन यह तभी होगा जब हर जगह लोग इसके खिलाफ आवाज़ उठाएँ और कार्रवाई की मांग करें।

दुनिया के सबसे निकृष्टतम हथियार	3
हिरोशिमा और नागासाकी	11
परमाणु परीक्षणों की विरासत	19
आज के परमाणु हथियार	27
उन्मूलन का पक्ष	31
परमाणु हथियारों पर प्रतिबंध	39
उन्मूलन के लिए कार्रवाई	45
अभियान के बारे में	51

खंडहरों में हिरोशिमा। साभार: अमेरिकी सरकार

दुनिया के सबसे निकृष्टतम हथियार

परमाणु हथियार अब तक बनाए गए हथियारों में सबसे अधिक विनाशकारी, अविवेकी और अमानवीय हैं। एक अकेले बम में पूरे शहर को नष्ट करने की पर्याप्त शक्ति है, जिसमें मरने वालों की संख्या करोड़ों में नहीं तो कम से कम लाखों में मापी जा सकती है।

रेड क्रॉस की अंतर्राष्ट्रीय समिति ने परमाणु हथियारों को "अपनी विनाशकारी शक्ति में, उनके द्वारा पैदा होने वाली अकथनीय मानवीय पीड़ा में... पर्यावरण के लिए, आने वाली पीढ़ियों और वास्तव में मानवता के अस्तित्व के लिए उनके खतरे में अद्वितीय" के रूप में वर्णित किया है।

भारी मात्रा में विकिरण का उत्सर्जन करते हुए, वे हवा, भूमि , पानी और हमारे शरीर को ज़हरीला करते हैं, जिसका नुकसान राष्ट्रीय सीमाओं के पार और कई पीढ़ियों तक होता है।

जब तक ये हथियार मौजूद हैं, एक वास्तविक खतरा बना रहेगा है कि उनका फिर से उपयोग किया जाएगा, और इसके परिणाम विनाशकारी होंगे – जिसका प्रभाव उन देशों के लोगों पर भी पड़ेगा जिनका उस युद्ध से कोई लेना-देना नहीं है जिसमें उनका उपयोग किया जाता है।

परमाणु हथियार के प्रभाव

ऊष्मा

जब किसी परमाणु हथियार का विस्फोट होता है, तो उससे अत्यधिक ऊष्मा निकलती है। विस्फोट स्थल केंद्र (ग्राउंड ज़ीरो) के करीब की लगभग हर चीज़ और व्यक्ति तुरंत राख और वाष्प में बदल जाते हैं।

एक बड़ा आग का गोला, जिसके केंद्र में दस लाख डिग्री सेल्सियस से अधिक तापमान होता है, आसमान में ऊंचा उठता है, और जमीन का तापमान कई हजार डिग्री तक पहुंच जाता है – जो सूर्य की सतह से भी ज्यादा गर्म होता है।

यह भीषण ऊष्मा एक विस्तृत क्षेत्र में आग लगा देती है, जो हवा में जहरीला धुआं और ज्वलन गैसें छोड़ती है और मिलकर एक विशाल अग्नि-तूफान का रूप ले लेती हैं।

ग्राउंड ज़ीरो से दसियों किलोमीटर दूर रहने वाले लोग भी गंभीर, जानलेवा रूप से झुलस जाते हैं, जबकि और अधिक दूर रहने वाले लोग प्रकाश की तेज़ चमक से अंधे हो जाते हैं।

विस्फोट

परमाणु हथियार उच्च दबाव वाली हवा की एक विशाल, तेजी से आगे बढ़ने वाली दीवार भी उत्पन्न करता है जिसे प्रघाती तरंग (शॉक वेव) कहते हैं, जो कई किलोमीटर बाहर की तरफ़ फ़ैलती है।

यह विस्फोट लोगों को हवा में उछाल देता है, उन्हें बेहोश कर देता है, उनके शरीरों को चीर देता है और उनके फेफड़ों को नष्ट कर देता है।

एक बड़े क्षेत्र में इमारतें पूरी तरह से ढह जाती हैं, और कई लोग कुचलकर मारे जाते हैं। बिखरी हुई चीजें मिसाइलों की तरह हवा में उछल जाती हैं।

विस्फोट के बल से कंक्रीट और स्टील की बड़ी गगनचुंबी इमारतें भी नष्ट हो जाती हैं।

विकिरण

विस्फोट का कारण बनने वाली नाभिकीय शृंखला अभिक्रिया भारी मात्रा में आयनकारी विकिरण उत्सर्जित करती है, जो लोगों के शरीर में गहराई तक प्रवेश कर उनकी कोशिकाओं को नष्ट या क्षतिग्रस्त कर देती है और रोग उत्पन्न करती है।

ग्राउंड ज़ीरो से कई किलोमीटर की दूरी पर भी, लोगों को विकिरण की इतनी अधिक मात्रा पहुँचती है कि तीव्र विकिरण विषाक्तता से मृत्यु हो सकती है।

इसके लक्षणों में उल्टी, मसूड़ों से खून आना, दस्त और बालों का झड़ना शामिल हैं। अधिकांश पीड़ित हमले के कुछ महीनों में ही मर जाते हैं।

कुछ लोग बीमारी के तीव्र चरण से उबर जाते हैं लेकिन विकिरण के विलंबित प्रभावों के कारण होने वाले कैंसर और अन्य बीमारियों से वर्षों या दशकों बाद मर जाते हैं।

कुछ जीवित बचे लोगों में गुणसूत्रीय विकृतियाँऔर अन्य प्रकार की आनुवंशिक क्षति पाई जाती है, जो आने वाली पीढ़ियों तक संचारित हो सकती है।

रडेयिोधरम्ी धलू (फॉ़लआउट)

परमाणु हथियार एक विशाल मशरूम जैसा बादल भी बनाता है, जो रेडियोधर्मी धूल और मलबे को एक स्तंभ में सोख लेता है और इसे वायुमंडल में छोड़ देता है।

वायुधाराएं इसे हवा में बिखेर देती हैं, और यह अंततः जमीन पर एक विशाल क्षेत्र में गिर जाता है।

फ़ॉलआउट के नाम से जाना जाने वाला यह पदार्थ, ग्राउंड ज़ीरो से बहुत दूर रहने वाले लोगों के लिए भी तत्कालिक और दीर्घकालिक स्वास्थ्य के लिए ख़तरे पैदा करता है। कुछ रेडियोधर्मी समस्थानिक (आईसोटोप) कई वर्षों तक ख़तरनाक बने रहते हैं, जो मिट्टी, पानी और खाद्य आपूर्ति को दूषित कर देते हैं।

वदियि्तु चमु्बकीय आवगे (इलकेट्र्ोमगैन्टेकि पलस्)

जब अत्यधिक ऊंचाई पर विस्फोट किया जाता है, तो परमाणु हथियार एक शक्तिशाली विद्युत चुम्बकीय आवेग उत्सर्जित करता है, जो एक विस्तृत क्षेत्र में इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों को नष्ट कर देता है। संचार सेवाएं, इंटरनेट और बैंकिंग टेक्नॉलजी सभी गंभीर रूप से बाधित हो जाती हैं।

यह प्रभाव पहली बार वायुमंडलीय और उच्च-ऊंचाई वाले परमाणु परीक्षण के युग के दौरान देखा गया था। 1962 में, जब संयुक्त राज्य अमेरिका ने प्रशांत महासागर में जॉनस्टन एटोल से लगभग 400 किलोमीटर ऊपर बाहरी अंतरिक्ष में एक परमाणु हथियार का परीक्षण किया, तो इससे 1,450 किलोमीटर से अधिक दूर, हवाई (Hawaii) में सड़कों की बत्तियाँ और फोन क्षतिग्रस्त हो गए।

एक बहुत अधिक क्षमता, उच्च-ऊंचाई वाला परमाणु विस्फोट पूरे महाद्वीप में इलेक्ट्रॉनिक्स उपकरणों को नष्ट कर सकता है।

गैस मास्क गामा विकिरण से कोई सुरक्षा प्रदान नहीं करते हैं। साभार: रिकी पिटमैन

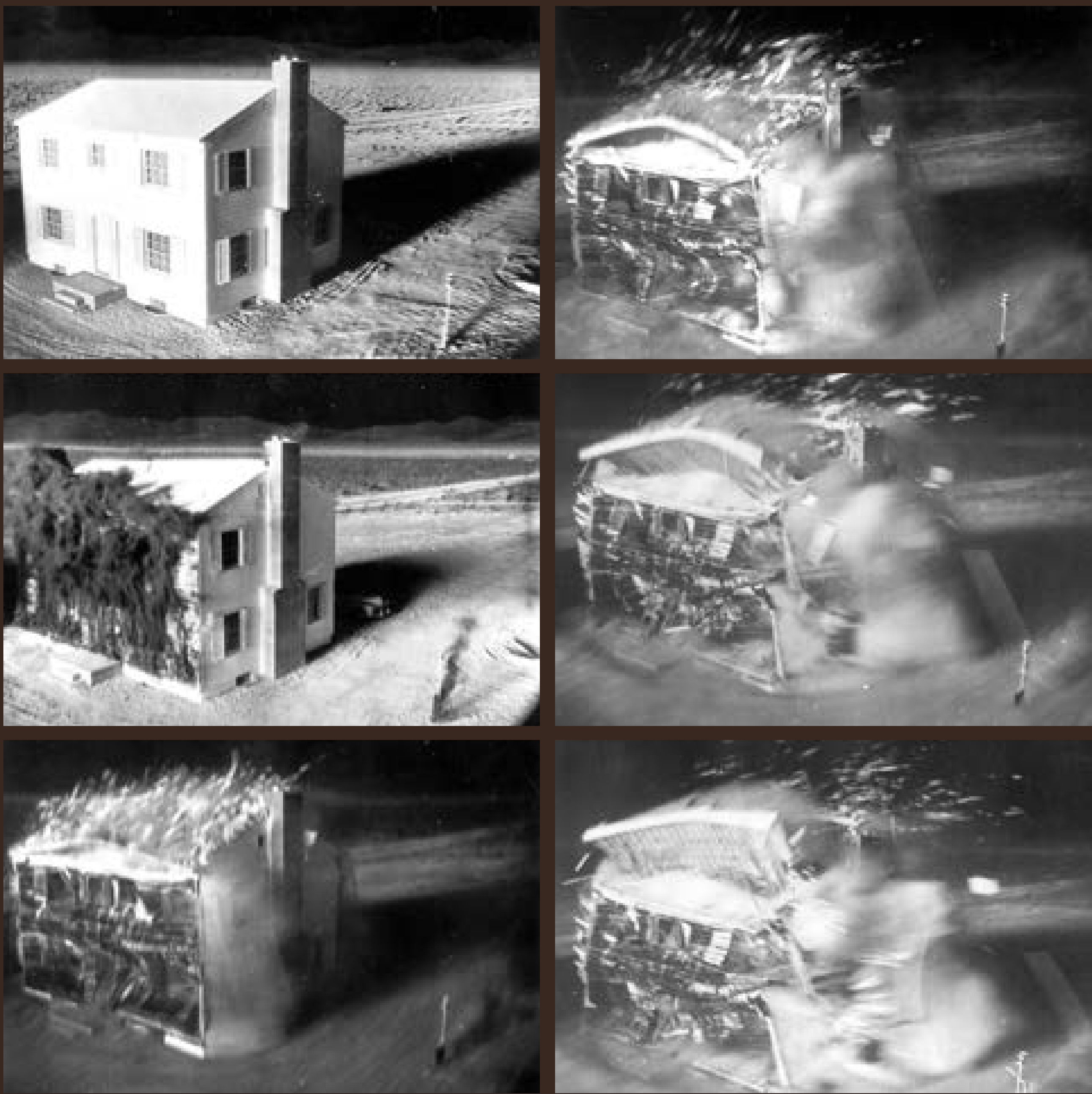

अमेरिकी राज्य नेवादा में एक नकली घर पर परमाणु परीक्षण विस्फोट के विस्फोट प्रभाव। साभार: अमेरिकी सरकार

बच्चों की अधिक संवेदनशीलता

शिशु और बच्चे परमाणु हथियारों के प्रभावों के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील होते हैं।

वयस्कों की तुलना में उनके जलने (क्योंकि उनकी त्वचा पतली और अधिक नाजुक होती है), विस्फोट की चोटों (उनके शरीर की सापेक्ष नाजुकता को देखते हुए) और तीव्र विकिरण से हुई बीमारियों (क्योंकि उनके पास अधिक कोशिकाएं होती हैं जो तेजी से बढ़ रही हैं और विभाजित हो रही हैं) से मरने की संभावना अधिक होती है।

वे ढह चुकी और जल रही इमारतों से खुद को बाहर निकालने या बाद में अपनी जीवित रहने की संभावना बढ़ाने के लिए अन्य कदम उठाने में भी कम सक्षम होते हैं।

1945 में नागासाकी पर अमेरिकी परमाणु बमबारी के बाद एक बच्चे का जलने का इलाज हो रहा है।
साभार: यासुओ टोमिशिगे

परमाणु शीतकाल और अकाल

परमाणु हथियार अब तक बनाए गए ऐसे एकमात्र उपकरण हैं जिनमें पृथ्वी पर उपस्थित सभी जटिल जीवन रूपों को नष्ट करने की क्षमता है।

यदि उनमें से सौ या उससे अधिक का उपयोग शहरों के खिलाफ़ किया जाता है, तो इसके परिणामस्वरूप होने वाले अग्नि-तूफान से निकलने वाली कालिख और धुआं ग्रह को ढक लेगा और एक दशक या उससे अधिक समय तक सूरज की रोशनी को रोक देगा, जिससे वैश्विक तापमान में भारी गिरावट आएगी – इस प्रभाव को परमाणु शीतकाल कहा जाता है।

अंधेरे में डूबी हुई दुनिया अब के उष्णकटिबंधीय वाले क्षेत्रों में भी कड़ाके की ठंड का अनुभव करेगी। खाद्य फसलें तबाह हो जाएंगी और वैश्विक कृषि उत्पादन ढह जाएगा, जिससे व्यापक अकाल और सामाजिक विघटन होगा।

संक्रामक रोगों के प्रकोप और दुर्लभ संसाधनों के लिए संघर्ष व्यापक हो जाएंगे। पहले से ही कुपोषित लोगों को मृत्यु का जोखिम सबसे अधिक होगा।

यहां तक कि एक तथाकथित “सीमित” परमाणु युद्ध – जिसमें परमाणु हथियारों की वैश्विक सूची का एक छोटा सा हिस्सा शामिल है – दुनिया की अधिकांश आबादी को भुखमरी के जोखिम में डाल देगा।

ऐसी युद्ध से ओज़ोन परत गंभीर रूप से क्षीण हो जाएगी, जिससे कुछ प्रकार के कैंसर में भारी वृद्धि होगी और समुद्री जीवन का विनाशकारी नुकसान होगा। कई पौधों और जानवरों की प्रजातियाँ विलुप्त हो जाएंगी, और ग्रह को पहुँचने वाला नुकसान अपरिवर्तनीय होगा।

विस्थापन और आर्थिक पतन

परमाणु युद्ध में, फ़ॉलआउट के संपर्क में आने वाले लाखों लोगों को आश्रय, अप्रदूषित भोजन और पानी, और स्वास्थ्य देखभाल की तत्काल आवश्यकता में पड़ोसी देशों में अपने घर छोड़कर भागने के लिए मजबूर होना पड़ेगा। शरण मांगने वाले लोगों की संख्या इतिहास में अभूतपूर्व होगी।

कई परमाणु हथियारों के उपयोग से अंतर्राष्ट्रीय व्यापार और दूरसंचार भी गंभीर रूप से बाधित होंगे, और संभवतः वैश्विक आर्थिक पतन का कारण बनेंगे, जिससे गरीबी और भी बदतर हो जाएगी और मानव विकास के लक्ष्य दशकों पीछे चले जाएंगे।

कोई भी राष्ट्र या व्यक्ति इसके संभावित प्रभावों से सुरक्षित नहीं है।

वैश्विक जलवायु प्रभाव

कई परमाणु हथियारों का उपयोग किया जाता है।

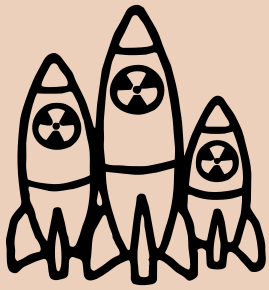

कालिख और धुआं सूरज की रोशनी को रोक देते हैं।

वैश्विक तापमान में भारी गिरावट आती है।

कृषि उत्पादन ढह जाता है।

भुखमरी से लाखों लोग मर जाते हैं।

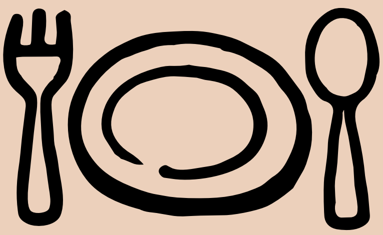

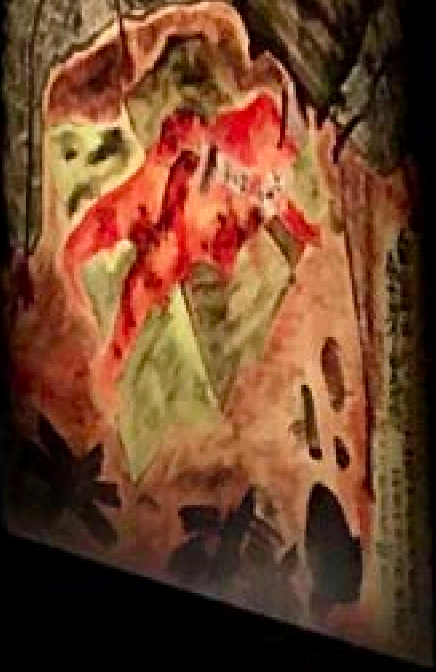

"कुछ देर बाद, मैंने हवाई हमले से बचने वाले आश्रय (एयर रेड शेल्टर) से बाहर झाँका। मैंने खेल के मैदान में लोगों को इधर-उधर बिखरा हुआ पाया। ज़मीन लगभग पूरी तरह से शवों से ढकी हुई थी। उनमें से अधिकांश मृत लग रहे थे और शांत पड़े थे। हालाँकि, यहाँ-वहाँ कुछ अपनी टांगें पटक रहे थे या अपनी बाहें उठा रहे थे।"

– फ़ुजियो त्सुजीमोटो, पाँच वर्षीय, नागासाकी

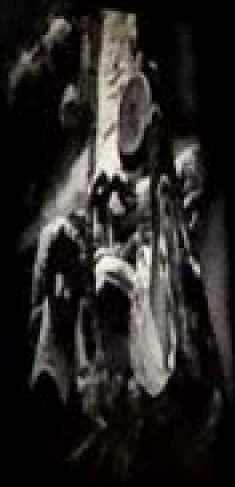

हिरोशिमा शांति स्मारक संग्रहालय में एक चित्र।

हिरोशिमा और नागासाकी

अगस्त 1945 में जब संयुक्त राज्य अमेरिका ने जापानी शहरों हिरोशिमा और नागासाकी पर दो अपेक्षाकृत छोटे परमाणु बम गिराए, तो ढाई लाख से अधिक लोग मारे गए थे – यह किसी युद्ध में परमाणु हथियारों का पहला और एकमात्र उपयोग था।

कई लोग तुरंत भस्म हो गए थे। अन्य हमलों के घंटों, दिनों या हफ्तों बाद गंभीर रूप से जलने, विस्फोट की चोटों और तीव्र विकिरण बीमारी से तड़प-तड़प कर मर गए। विकिरण से संबंधित कैंसर और अन्य बीमारियों से वर्षों बाद अनगिनत अन्य लोगों की मृत्यु हो गई।

ऐसे अत्याचारों की पुनरावृत्ति को रोकने के लिए, राष्ट्रों को परमाणु हथियारों को समाप्त करने के लिए तत्परता से कार्य करना चाहिए।

हिरोशिमा और नागासाकी में विनाश के दृश्य प्रलयंकारी थे: स्कूल के मैदान मृत और मरते हुए बच्चों से बिखरे पड़े थे। माताएँ अपने निर्जीव शिशुओं को गोद में लिए हुए थीं। लोगों की आँतें बाहर लटक रही थीं और उनके अंगों से त्वचा की पट्टियाँ लटक रही थीं।

अधिकांश पीड़ित लोग अपनी पीड़ा को कम करने के लिए बिना किसी देखभाल के ही मर गए, क्योंकि कुछ ही अस्पताल बचे थे, चिकित्सा आपूर्ति नष्ट हो चुकी थी, और अधिकांश डॉक्टर और नर्स मारे गए या घायल हो गए थे। बाद में सहायता प्रदान करने के लिए शहरों में प्रवेश करने वालों ने अवशिष्ट विकिरण के कारण अपनी जान जोखिम में डाल दी थी।

विस्फोट स्थल केंद्र (ग्राउंड ज़ीरो)

प्रत्येक शहर में, जो लोग ग्राउंड ज़ीरो – जो कि विस्फोट का अवकेंद्र (हाइपोसेंटर) होता है – के सबसे करीब थे, उनके बचने की संभावना बहुत कम थी। ग्राउंड ज़ीरो से 1.2 किलोमीटर के त्रिज्या में और बम के प्रभावों से असुरक्षित लगभग हर व्यक्ति तुरंत या कुछ हफ्तों के भीतर मर गया था।

अवकेंद्र पर जमीन का तापमान 3,000 से 4,000 डिग्री सेल्सियस तक पहुंच गया था, जिससे 3.5 किलोमीटर दूर तक के लोग झुलस गए थे। शक्तिशाली प्रघाती तरंगों ने २ किलोमीटर के भीतर अधिकांश लकड़ी की संरचनाओं को नष्ट कर दिया था।

1 किलोमीटर की दूरी पर भी, लोगों को आयनकारी विकिरण की इतनी अधिक मात्रा मिली कि तीव्र विकिरण विषाक्तता से उनकी मृत्यु हो गई। बहुत दूर रहने वाले कई लोग भी विकिरण के संपर्क में आने के विलंबित प्रभावों से मर गए।

अधिकतर पीड़ित – 90 प्रतिशत से अधिक – सामान्य नागरिक थे, जिनमें लगभग 38,000 बच्चे भी थे। हिरोशिमा पर हमले के समय, लगभग 8,400 जूनियर हाई स्कूल के छात्र नागरिक सुरक्षा उपाय के रूप में आग रोकने के लिए बाहर थे; उनमें से 6,300 की मौत हो गई थी।

विस्फोट के बाद

बमबारी के बाद की अव्यवस्थित हालत में, माता-पिता बेताबी से अपने बच्चों की तलाश कर रहे थे, और बच्चे ने अपने माता पिता की। कुछ लोगों को अपने प्रियजनों के केवल जले हुए अवशेष या उनके सामान ही मिले; बाक़ी लोगों को कोई सुराग नहीं मिला था।

परिवार के सदस्यों को फिर से मिलाने के प्रयास इस वजह से और भी कठिन हो गए थे कि कई लोगों को इतनी गंभीर चोटें आई थीं कि उन्हें पहचानना मुश्किल था।

कुछ पीड़ितों के शरीर पर कोई शारीरिक घावों के निशान नहीं थे, लेकिन वे अचानक बीमार पड़ गए और मर गए। उनकी मौतों ने प्राथमिक उपचार देने वालों को रहस्य में डाल दिया, जो इस बात से अनजान थे कि विनाशकारी, रेडियोधर्मी प्रभाव वाले एक नए प्रकार के हथियार का इस्तेमाल किया गया था।

शहरों में कई गर्भवती महिलाओं का गर्भपात हो गया या उन्होंने ऐसे शिशुओं को जन्म दिया जिनकी शिशु अवस्था में ही मृत्यु हो गई, क्योंकि बमों से निकलने वाला विकिरण उनके गर्भाशय में प्रवेश कर गया था। गर्भ में विकिरण के संपर्क में आने वाले बच्चों में माइक्रोसेफली सहित जन्मजात विकृतियाँ आम थीं।

हमले के एक महीने बाद नागासाकी। साभार: अमेरिकी सरकार

तबाही के बाद नागासाकी में राशन का भोजन प्राप्त करता एक लड़का। साभार: योसुके यामाहाता

शिनिची की तिपहिया साइकिल

हिरोशिमा पर हमले के समय, तीन वर्षीय शिनिची तेत्सुतानी अपने घर के बाहर वह कर रहा था जो उसे सबसे ज्यादा पसंद था – अपनी तिपहिया साइकिल की सवारी करना।

उसे गंभीर चोटें आईं, उसका पूरा शरीर जल चुका था, और कुछ घंटों के बाद उसकी मृत्यु हो गई। उसकी दो बहनें, मिचिको और योको भी मारी गईं थीं।

उनके पिता ने वर्षों बाद कहा: "बच्चों के साथ ऐसा कभी नहीं होना चाहिए। कृपया एक ऐसी शांतिपूर्ण दुनिया बनाने के लिए काम करें जहाँ बच्चे जी भर के खेल सकें।"

शिनिची की जली हुई तिपहिया साइकिल अब हिरोशिमा शांति स्मारक संग्रहालय में स्थायी प्रदर्शन पर है, और जिनेवा में अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस और रेड क्रिसेंट संग्रहालय में इस पर आधारित एक मूर्ति पाई जा सकती है।

यह साइकिल परमाणु हमलों में बच्चों की पीड़ा का एक मार्मिक प्रतीक बन गई है।

साभार: हिरोशिमा शांति स्मारक संग्रहालय, नोबुओ तेत्सुतानी द्वारा दान किया गया

हिरोशिमा की बहनें

दो वर्षीय किमिनो वाटाओका और उसकी पांच वर्षीय बहन, हिरोनो, हिरोशिमा पर हमले के समय अपने माता-पिता के साथ घर पर थीं। वे चारों मारे गए थे।

एक अन्य बहन, कायोको, ग्राउंड ज़ीरो के करीब थी और वह भी मारी गई थी। केवल सबसे बड़ी बहन, चिज़ुको ही जीवित बची।

माना जाता है कि किमिनो (बाएं) और हिरोनो (दाएं) की यह तस्वीर परमाणु बमबारी से ठीक एक दिन पहले ली गई थी। साभार: मिहो इवाता

बम से विकिरणित

जब हिरोशिमा नष्ट हुआ तब टोरू इकेमोतो सात वर्ष का था और उसकी बहन, आइको, नौ वर्ष की थी। वे दोनों घर के अंदर थे, हाइपोसेंटर से लगभग 1 किलोमीटर दूर।

हमले के चार या पांच दिनों में, उनके बाल झड़ने लगे और उन्हें बुखार और मसूड़ों से खून आने लगा – ये तीव्र विकिरण से विषाक्तता के लक्षण थे।

जबकि दोनों बीमारी के तीव्र चरण से उबर गए थे, अंततः वे विकिरण के विलंबित प्रभावों के शिकार हो गए। टोरू की 11 वर्ष की आयु में और आइको की 29 वर्ष की आयु में मृत्यु हो गई।

अक्टूबर 1945 में हिरोशिमा रेड क्रॉस अस्पताल में भाई-बहन टोरू (बाएं) और आइको (दाएं)। साभार: शुनकिची किकुची

जीवित बचे लोग

जो लोग संयोग से हिरोशिमा और नागासाकी के परमाणु बम विस्फोटों में जीवित बच गए थे, उन्हें जापानी भाषा में हिबाकुशा, या "विस्फोट से प्रभावित लोग" के रूप में जाना जाने लगा।

कई लोगों ने मनोवैज्ञानिक आघात के साथ-साथ अपनी चोटों के कारण आजीवन दर्द और परेशानी सही। कुछ लोगों के शरीर और चेहरे पर मोटे दाग-धब्बे बन गए, या वे दशकों तक अपने मांस में गहरे धंसे कांच के टुकड़ों के साथ जीते रहे।

महिलाओं को विशेष रूप से कठिनाई और लांछन का सामना करना पड़ा क्योंकि उन्हें डर था कि बमों के कारण होने वाली आनुवंशिक क्षति उनके बच्चों और पोते-पोतियों में स्थानांतरित हो जाएगी।

हमलों के कुछ वर्षों में, विकिरण के विलंबित प्रभावों के परिणामस्वरूप जीवित बचे लोगों में असामान्य उच्च दर से कैंसर और अन्य बीमारियाँ विकसित होने लगीं। शुरुआती वर्षों में ल्यूकेमिया रोग विशेष रूप से आम था।

दुनिया को परमाणु हथियारों के खतरे के प्रति सचेत करने के लिए, कई बचे हुए लोगों ने सार्वजनिक रूप से सन् 1945 में जो हुआ उसकी अपनी गवाहियाँ सार्वजनिक रूप से साझा की हैं। हमलों के समय जो बच्चे थे उनमें से कुछ आज भी जीवित हैं और सच्चाई बताने के कार्य को जारी रखे हुए हैं।

दशकों से उनका संदेश स्पष्ट और सुसंगत रहा है: परमाणु हथियार और मानवता का सहस्तित्व संभव नहीं है।

सन् 2024 में, निहोन हिडंक्यो – जीवित बचे लोगों का प्रतिनिधित्व करने वाले संगठनों के एक जापानी महासंघ – ने "परमाणु हथियारों से मुक्त दुनिया हासिल करने के अपने प्रयासों और गवाहों की गवाही के माध्यम से यह प्रदर्शित करने के लिए कि परमाणु हथियारों का फिर से कभी उपयोग नहीं किया जाना चाहिए" नोबेल शांति पुरस्कार जीता।

जीवित बचे लोगों की साहसी, निरंतर वकालत ने दुनिया भर में कई लोगों को परमाणु उन्मूलन के आंदोलन में शामिल होने के लिए प्रेरित किया है।

एक उत्तरजीवी और पक्षधर

एक 16 वर्षीय लड़का, सुमितेरू तानिगुची जो नागासाकी के परमाणु बम विस्फोट में बच गया था, उसने बताया "विस्फोट की चमक में, मुझे पीछे से मेरी साइकिल से उड़ा दिया गया और ज़मीन पर पटक दिया गया," ।

जब उसने अपना सिर उठाया, तो उसने देखा कि जो बच्चे कुछ ही क्षण पहले उसके चारों ओर खेल रहे थे, वे अब मर चुके थे।

हाइपोसेंटर से लगभग 2 किलोमीटर दूर होने के बावजूद, उसकी पीठ, बायां हाथ और बायां पैर गंभीर रूप से जल गए थे। उसके घाव जल्द ही संक्रमित हो गए, और उसने अस्पताल में ठीक होने में लगभग चार साल बिताए, जिसमें 21 महीने उसे पेट के बल लेटना पड़ा।

उसकी चोटों का दर्द कभी दूर नहीं हुआ। उसने अपना अधिकांश जीवन परमाणु हथियारों के उन्मूलन के उद्देश्य को समर्पित कर दिया।

सुमितेरू तानिगुची 1946 में ली गई अपनी एक तस्वीर देखते हुए, उनकी पीठ पर नागासाकी बम के निशान हैं। साभार: युरिको नाकाओ

सन् 1954 में मार्शल द्वीप समूह में संयुक्त राज्य अमेरिका द्वारा परमाणु हथियार का परीक्षण किए जाने पर 13 वर्षीय इरोजी केबेनली विकिरण से झुलस गया था। साभार: अमेरिकी सरकार

परमाणु परीक्षण विस्फोट से उठा मशरूम बादल। साभार: अमेरिकी सरकार

परमाणु परीक्षणों की विरासत

अपने परमाणु बलों की विनाशकारी क्षमता और घातकता को बढ़ाने के लिए, और अपने विरोधियों को चेतावनी भेजने के लिए, परमाणु-सशस्त्र देशों ने सन् 1945 के बाद से दुनिया भर में 2,000 से अधिक परमाणु विस्फोट परीक्षण किए है।

वायुमंडल और महासागरों में भारी मात्रा में विकिरण उत्सर्जन करते हुए, इन जहरीले प्रयोगों ने कैंसर और अन्य दीर्घकालिक बीमारियों की महामारियाँ फ़ैला दी हैं। परीक्षण स्थलों के बंद होने के दशकों बाद भी, भूमि के विशाल क्षेत्र रहने के लिए असुरक्षित बने हुए हैं।

अमेरिकी राज्य न्यू मैक्सिको में हिरोशिमा और नागासाकी पर परमाणु बम विस्फोटों से ठीक तीन सप्ताह पहले, अमेरिकी सरकार ने दुनिया का पहला परमाणु विस्फोट परीक्षण किया, जिसका कोड-नाम “ट्रिनिटी” था। इसके विशाल आग के गोले ने रेत को कांच में बदल दिया, आसपास के पहाड़ों को रोशन कर दिया और विकिरणयुक्त मलबे के एक मशरूम बादल को आसमान में 12 किलोमीटर की ऊँचाई तक भेज दिया।

परीक्षण स्थल के श्रमिकों और आस-पास के समुदायों के लिए इसके परिणाम विनाशकारी थे – और आज भी महसूस किए जा रहे हैं।

दुनिया भर में ऑस्ट्रेलिया और अल्जीरिया के रेगिस्तानों से लेकर कज़ाखस्तान के मैदानों और प्रशांत महासागर के एटोल तक फैले 60 से अधिक अन्य परमाणु परीक्षण स्थलों के नीचे हवा की दिशा में या नदी के प्रवाह की दिशा में रहने या काम करने वाले लोगों के साथ भी यही स्थिति रही है।

परमाणु परीक्षण स्थल

परमाणु हथियारों का परीक्षण इन देशों में किया गया है: अल्जीरिया, ऑस्ट्रेलिया, चीन, भारत, कज़ाख़िस्तान, किरिबाती, माओही नूई (फ्रांसीसी पोलिनेशिया), मार्शल द्वीप समूह, उत्तर कोरिया, पाकिस्तान, रूस, तुर्कमेनिस्तान, यूक्रेन, संयुक्त राज्य अमेरिका और उज़्बेकिस्तान।

वायुमंडलीय परमाणु विस्फोट परीक्षण – जिनमें से 500 से अधिक परीक्षण 1945 से 1980 के दौरान किए गए थे – का विशेष रूप से हानिकारक प्रभाव पड़ा, जिससे रेडियोधर्मी कण दूर-दूर तक फैल गए। उनकी संयुक्त विनाशकारी शक्ति 29,000 हिरोशिमा बमों के बराबर थी।

आज, हर जीवित व्यक्ति के शरीर में वायुमंडलीय परीक्षणों से रेडियोधर्मी पदार्थ मौजूद हैं, जिससे उनके बीमार होने का खतरा बढ़ जाता है। चिकित्सकों का अनुमान है कि, समय के साथ, ये पिछले परीक्षण कैंसर और अन्य बीमारियों से कम से कम 40 लाख समयपूर्व मौतों का कारण बनेंगे।

पानी के भीतर और जमीन के नीचे किए गए परमाणु परीक्षण विस्फोटों के भी दीर्घकालिक स्वास्थ्य और पर्यावरण पर प्रभाव हुए हैं।

२०वीं सदी के उत्तरार्ध में, परमाणु परीक्षण के प्रभावों के बारे में दुनिया भर में चिंता ने दुनिया के कई हिस्सों में बड़े पैमाने पर विरोध आंदोलनों को जन्म दिया, जिससे नेताओं को 1963 में एक आंशिक प्रतिबंध और 1996 में एक व्यापक प्रतिबंध पर समझौता-वार्ता करने के लिए प्रेरित किया। इन दोनों प्रतिबंधों ने विश्व स्तर पर परमाणु परीक्षण को रोकने में मदद की है।

लेकिन लोगों के जीवन और पृथ्वी के नाजुक पारिस्थितिक तंत्र के लिए पिछले परीक्षणों के प्रभाव आने वाली पीढ़ियों तक महसूस किए जाते रहेंगे। अंतर्राष्ट्रीय समुदाय का यह दायित्व है कि वह न केवल यह सुनिश्चित करे कि ऐसा विनाश फिर कभी न हो, बल्कि पहले से हुए नुकसान को दूर करने के लिए भी काम करे।

दुनिया में कहीं भी हुए परमाणु परीक्षण से जीवित बचे कुछ ही लोगों को उनके कष्टों के लिए मुआवजा मिला है, और पूर्व परमाणु परीक्षण स्थलों को साफ करने के प्रयास बेहद अपर्याप्त रहे हैं। कुछ स्थानों पर, जर्जर बुनियादी ढांचा आगे और अधिक प्रदूषण का एक निरंतर ख़तरा पैदा कर रहा है।

रेडियोधर्मी नस्लवाद

परमाणु परीक्षण से संबंधित निर्णयों में अक्सर नस्लवादी मान्यताओं का आधार रहा है, जिसमें सरकारों और औपनिवेशिक शक्तियों ने आदिवासी लोगों को बलिदान होने योग्य और उनकी पवित्र भूमि को बेकार और "दूरस्थ" माना है।

"हमारी भूमि, हमारे समुद्र, समुदाय और हमारे भौतिक शरीर अब हमारे साथ, और आने वाली अज्ञात पीढ़ियों तक, इन घातक प्रयोगों की विरासत को ढोते हैं," ऑस्ट्रेलिया की एक यनकुनतजत्जरा अनंगु महिला करीना लेस्टर ने 2017 में संयुक्त राष्ट्र में आदिवासी समूहों के गठबंधन की ओर से गवाही दी।

उन्होंने कहा कि " अधिक घातक सामूहिक विनाश के हथियारों" की खोज में, अधिकारियों ने आदिवासी लोगों को "गिनी पिग" (प्रयोग के जानवर) जैसा माना। उनकी सहमति शायद ही कभी मांगी गई थी, प्राप्त करना तो दूर की बात है, और और उन्हें लगभग कोई सुरक्षा नहीं दी गई।

परमाणु परीक्षण की जहरीली विरासत का मतलब है कि कई समुदाय अपनी पारंपरिक जीवन शैली से कट गए हैं, वे पैतृक स्थलों पर लौटने या भूमि और पानी पर जीवित रहने में असमर्थ हैं जैसा कि उन्होंने सदियों से किया था।

सन् 1971 में माओही नूई के मोरुओरा एटोल में एक फ्रांसीसी परमाणु परीक्षण विस्फोट।

कज़ाख़िस्तान में एक रूसी परमाणु परीक्षण विस्फोट से बना गड्ढा। साभार: CTBTO

ऑस्ट्रेलिया: बम से अंधे

सन् 1953 में, जब यामी लेस्टर 10 वर्ष के थे, यूनाइटेड किंगडम ने ऑस्ट्रेलियाई आउटबैक में उनके घर के पास एमु फील्ड में परमाणु परीक्षण शुरू किया।

उन्हें याद है कि रेडियोधर्मी मलबा, या "काली धुंध", आसमान में भर गई थी। इससे उनकी आँखों में जलन होने लगी और, चार साल के भीतर, उनकी आँखों की रोशनी पूरी तरह चली गई।

"मैं बस दूसरे बच्चों के साथ खेल रहा था। तभी बम फट गया," उन्होंने याद किया। "मुझे वो आवाज़ याद है, यह एक अजीब आवाज़ थी, तेज़ नहीं थी, ऐसी कोई आवाज़ नहीं जो मैंने पहले कभी सुनी हो। उसी समय ज़मीन हिल उठी; हम पूरी जगह को हिलते हुए महसूस कर सकते थे।"

कुछ ही घंटों में, उनके समुदाय का हर व्यक्ति बीमार पड़ गया। "हम सभी को उल्टी आ रही थी; हमें दस्त, त्वचा पर चकत्ते और आँखों में दर्द हो रहा था," उन्होंने कहा। "कुछ बूढ़े लोगों की मौत भी हो गई।"

यामी आगे चलकर ऑस्ट्रेलिया में आदिवासी समुदायों की ओर से एक प्रमुख पक्षधर बने, जिन्हें परीक्षणों के परिणामस्वरूप नुकसान हुआ था। सन् २०१७ में उनकी मृत्यु के बाद से, उनके बच्चों ने न्याय के लिए संघर्ष जारी रखा है।

साभार: जसी बॉयलन

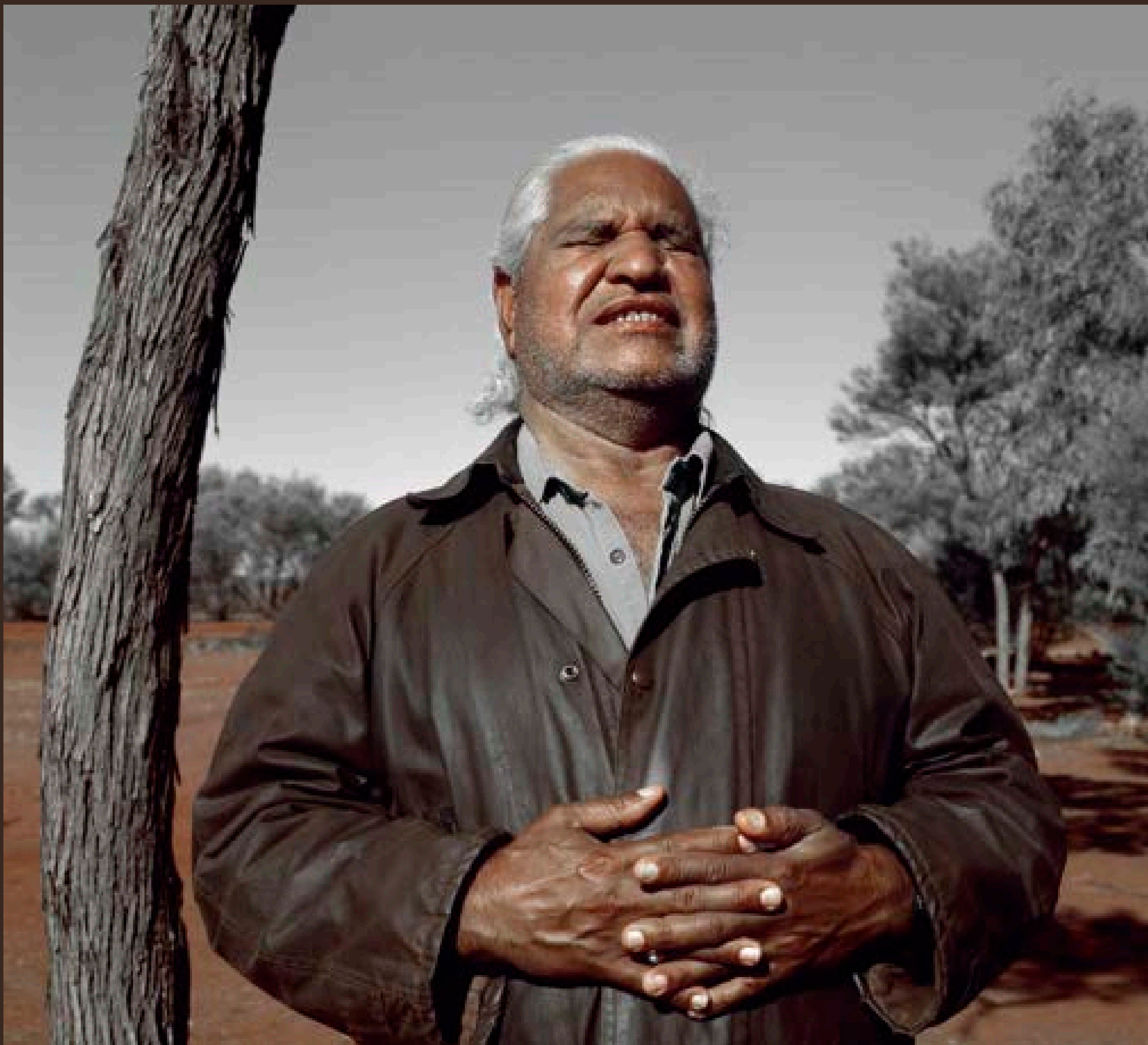

कज़ाख़िस्तान: बिना बाहों के जन्मे एक कलाकार

करीपबेक कुयुकोव कजाख गांव येगिंडीबुलक में पले-बढ़े, जो सेमीपालाटिंस्क के पास है – सोवियत संघ का सबसे बड़ा परमाणु परीक्षण स्थल। उन्होंने याद किया कि उनके बचपन के दौरान जब भी कोई परमाणु परीक्षण विस्फोट होता था, तो फर्नीचर और क्रॉकरी हिलने लगती थी।

उनके जन्म से पहले, उनके माता-पिता आसमान में ऊंचे उठने वाले चमकीले और विशाल मशरूम बादलों को बेहतर ढंग से देखने के लिए अपने घर के पास एक पहाड़ी पर चढ़ जाते थे।

"उन्हें स्वास्थ्य के खतरों और उनके खिलाफ किए जा रहे अपराधों के विनाशकारी परिणामों के बारे में पता तक नहीं था," उन्होंने बताया।

करीपबेक का जन्म 1968 में बिना बाहों के हुआ था। उन्होंने पैरों और मुंह से चित्रकारी करके एक प्रसिद्ध कलाकार के रूप में ख्याति प्राप्त की। उनकी कई कलाकृतियाँ परमाणु विरोधी संदेश देती हैं।

उन्होंने कहा, "इस धरती पर मेरा मुख्य मिशन मेरे जैसे लोगों के लिए वह सब कुछ करना है जो मैं कर सकता हूँ ताकि वे परमाणु परीक्षणों के अंतिम शिकार हों,"। "मैं पृथ्वी पर कहीं भी, किसी भी स्थान या समय पर इन घटनाओं की पुनरावृत्ति नहीं चाहता... हमारा आकाश साफ रहे और हमारे बच्चे स्वस्थ रहें!"

सन् 1949 से 1989 तक, सोवियत संघ ने सेमीपालाटिंस्क में 450 से अधिक परमाणु विस्फोट परीक्षण किए, जो विश्व स्तर पर सभी परीक्षणों का लगभग एक चौथाई है।

करीपबेक कुयुकोव की कलाकृतियों में से एक, जिसका शीर्षक "डर" है।

मार्शल द्वीप समूह: रेडियोधर्मी द्वीपसमूह

सन् 1954 में नेर्जे जोसेफ सात साल की थीं, जब संयुक्त राज्य अमेरिका ने मार्शल द्वीप समूह में रोंगलाप एटोल पर उनके घर से लगभग 160 किलोमीटर दूर अपना अब तक का सबसे बड़ा परमाणु परीक्षण विस्फोट, “कैसल ब्रावो” किया था।

यह अपेक्षा से बहुत विशाल था, और इसने कहीं अधिक प्रदूषण फैलाया। आसमान नारंगी और गुलाबी हो गया। एटोल के किसी भी निवासी को नहीं पता था कि क्या हुआ था।

घंटों बाद, रेडियोधर्मी राख और प्रवाल के टुकड़े उनके घरों पर बरसने लगे, जिससे उनकी त्वचा, पानी और भोजन दूषित हो गए। जल्द ही वे उन्हें तीव्र विकिरण बीमारी के लक्षण दिखने लगे।

नेर्जे के बाल झड़ने लगे और, एटोल पर लगभग हर किसी की तरह, वह झुलस गई थी।

कुछ दिनों बाद, अमेरिकी अधिकारियों ने स्वास्थ्य पर परमाणु अवशेष विकिरण के अत्यधिक ख़तरे के कारण रोंगेलापीवसियों को एक अन्य प्रवाल द्वीप पर स्थानांतरित कर दिया।। लेकिन विस्थापन के तीन साल बाद, अधिकारियों ने उन्हें लौटने के लिए प्रोत्साहित किया, क्योंकि वे अवशिष्ट विकिरण के स्वास्थ्य पर प्रभावों का अध्ययन करना चाहते थे।

उस समय एक अमेरिकी अधिकारी ने कहा था “इस प्रकार का डेटा पहले कभी उपलब्ध नहीं था,”। “यद्यपि यह सच है कि ये लोग पश्चिमी या सभ्य लोगों की तरह नहीं रहते, फिर भी यह सच है कि वे चूहों की तुलना में हमसे अधिक मिलते-जुलते हैं।”

रोंगलाप के लोगों के लिए, उनका घर वापस लौटना विनाशकारी साबित हुआ। कैंसर, गर्भपात, मृत जन्म और जन्म दोष कई गुना बढ़ गए।

रेडियोधर्मी समस्थानिकों के संचय के कारण, नेर्जे को शल्य चिकित्सा द्वारा अपना थायरॉयड निकालना पड़ा। वह परमाणु परीक्षण से पहले के अच्छे दिनों में लौटने के लिए तरसती थी।

सन् 1946 से 1958 तक, संयुक्त राज्य अमेरिका ने मार्शल द्वीप समूह में ६७ परमाणु विस्फोट परीक्षण किए। अकेले कैसल ब्रावो की विस्फोटक क्षमता हिरोशिमा बम की तुलना में एक हजार गुना अधिक थी।

आज भी, पूरे एटोल, कृषि उत्पादन और मछली पकड़ने के लिए असुरक्षित हैं।

नेर्जे जोसेफ के बालों का झड़ना और विकिरण से उसके पैरों का जलना। साभार: अमेरिकी सरकार

हानि के अन्य स्रोत

परमाणु हथियारों के विकास के अन्य पहलुओं – यूरेनियम के खनन से लेकर रेडियोधर्मी अपशिष्ट के निपटान तक – का भी मानवीय स्वास्थ्य और पर्यावरण पर विनाशकारी प्रभाव पड़ा है।

यूरेनियम खदानों में – जहां परमाणु हथियार बनाने की प्रक्रिया शुरू होती है – अपशिष्ट टेलिंग्स से रेडियोधर्मी और रासायनिक प्रदूषण मिट्टी और जलमार्गों में रिस गया है, जिससे श्रमिकों और आसपास के समुदायों को नुकसान पहुंचा है। खनन समाप्त होने के बाद दुनिया में कहीं भी किसी खदान को पूरी तरह से साफ नहीं किया गया है।

परमाणु हथियारों के लिए प्लूटोनियम के उत्पादन में शामिल परमाणु रिएक्टरों में भी रेडियोधर्मी प्रदूषण हुआ है। यूनाइटेड किंगडम के विंडस्केल परमाणु ऊर्जा केंद्र में, उदाहरण के लिए, सन् 1957 में तीन दिनों तक आग लगी रही, जिससे पूरे यूरोप के अधिकांश हिस्सों में विकिरण के बादल फैल गए। आसपास के फार्मों से आने वाला सारा दूध नष्ट करना पड़ा।

विश्व स्तर पर कई समुदायों को सन् 1945 के बाद से दसियों हज़ार परमाणु हथियारों के उत्पादन से जमा हुए भारी मात्रा में परमाणु अपशिष्ट के सुरक्षित, सुदृढ़ भंडारण से जुड़ी चुनौतियों का सामना कर रहे हैं। यह सदियों तक खतरनाक बना रहेगा।

अमेरिकी राज्य एरिज़ोना में परमाणु-विरोधी प्रदर्शनकारी। साभार: जैक कोहेन-जोप्पा

सन् 2023 में एक सैन्य परेड में एक रूसी परमाणु मिसाइल। साभार: रूसी सरकार

एक संग्रहालय में प्रदर्शित अमेरिकी परमाणु मिसाइलें। साभार: अमेरिकी सरकार

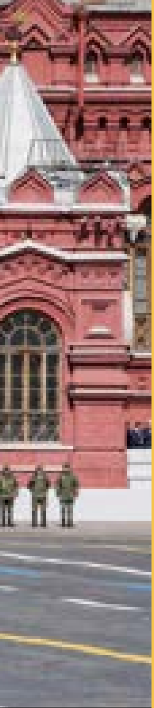

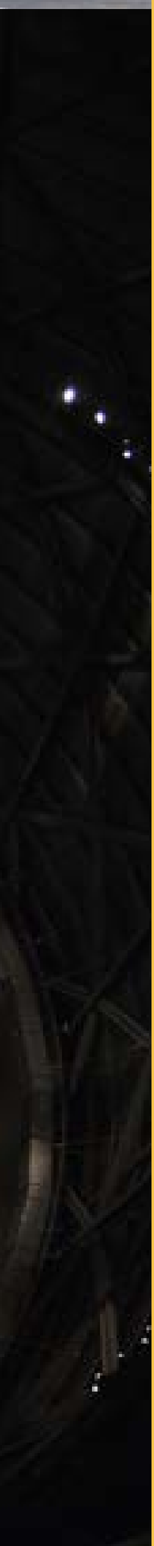

आज के परमाणु हथियार

आज, नौ देशों के पास कई हज़ारों परमाणु हथियार हैं, जो हर जगह लोगों के लिए एक अनोखा अस्तित्वगत खतरा पैदा करते हैं। उनमें से कई सैकड़ों उच्च सतर्कता (हाई अलर्ट) पर रखे गए हैं, जो मिनटों में उपयोग के लिए तैयार हैं।

वे मिसाइल गोदामों (साइलो) में, विमानों में और हर समय महासागरों में गश्त कर रही पनडुब्बियों पर हैं। कुछ अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए महाद्वीपों के पार हजारों किलोमीटर की यात्रा कर सकते हैं।

इनमें से अधिकांश बमों की विस्फोटक क्षमता परमाणु युग की शुरुआत में हिरोशिमा और नागासाकी पर गिराए गए बमों से कहीं अधिक है। सबसे बड़े बम पारंपरिक रासायनिक विस्फोटक टीएनटी के दस लाख टन यानी एक मेगाटन के बराबर शक्ति के होते हैं। यहाँ तक कि तथाकथित “सामरिक” परमाणु हथियार, जिन्हें युद्ध के मैदान में उपयोग के लिए बनाया गया है, उनकी विस्फोटक क्षमता हिरोशिमा बम से २० गुना अधिक हो सकती है।

एक परमाणु-सशस्त्र पनडुब्बी एक दर्जन या उससे अधिक बैलिस्टिक मिसाइलें ले जा सकती है, जिनमें से प्रत्येक में कई परमाणु हथियार लगे होते हैं, और उनकी संयुक्त क्षमता एक सौ से अधिक शहरों को नष्ट करने की होती है।

जिन सैन्य ठिकानों के पास परमाणु हथियार तैनात हैं, वहां रहने वाले लोगों को परमाणु हमले का शिकार होने या दुर्घटनावश परमाणु विस्फोट से नुकसान होने का विशेष रूप से अधिक ख़तरा होता है। सरकारी गोपनीयता के कारण, इनमें से कुछ लोगों को हथियारों से अपनी निकटता के बारे में पता भी नहीं हो सकता है।

परमाणु हथियार वाले देश

आज नौ देशों के पास परमाणु हथियार हैं: संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस, यूनाइटेड किंगडम, भारत, पाकिस्तान, इजरायल और उत्तर कोरिया। रूसी और अमेरिकी परमाणु शस्त्रागार सबसे बड़े हैं।

अधिकांश परमाणु हथियार केवल भंडारण में नहीं हैं। उन्हें सक्रिय रूप से तैनात किया गया है – किसी भी समय उपयोग के लिए तैयार – और सरकारें "आधुनिकीकरण" की आड़ में अपने शस्त्रागार को बढ़ाने और विस्तारित करने के लिए महंगे कार्यक्रमों में लगी हुई हैं।

कुछ परमाणु-सशस्त्र राष्ट्र नए प्रकार के परमाणु हथियार विकसित कर रहे हैं, उनकी डिलीवरी के लिए नई प्रणालियों का परीक्षण कर रहे हैं और संभावित परमाणु उपयोग के लिए अपने रणनीतियों का विस्तार कर रहे हैं। सभी अनिश्चित काल के लिए अपने परमाणु बलों को बनाए रखने के इरादे से प्रतीत होते हैं।

प्रसार संबंधी चिंताएँ

परमाणु-सशस्त्र राष्ट्रों का निरस्त्रीकरण न करना इस जोखिम को बढ़ा देता है कि और अधिक देश या गैर-सरकारी संस्थान एक दिन परमाणु हथियार हासिल कर लेंगे। निरस्त्रीकरण में प्रगति करना उनके प्रसार को रोकने के लिए अनिवार्य है।

यद्यपि प्रसार से बचाव के लिए महत्वपूर्ण उपाय लागू किए गए हैं, लेकिन इन उपायों की प्रभावशीलता की गारंटी नहीं दी जा सकती है। कोई भी देश जो यूरेनियम को समृद्ध करने या प्लूटोनियम का उत्पादन करने के लिए उपयोग किए गए परमाणु ईंधन को फिर से संसाधित करने में सक्षम है, सैद्धांतिक रूप से, कुछ ही महीनों में परमाणु हथियार विकसित कर सकता है।

दक्षिण अफ़्रीका, इज़राइल, भारत, पाकिस्तान और उत्तर कोरिया सभी ने कथित तौर पर "शांतिपूर्ण उद्देश्यों" के लिए बनी सुविधाओं और सामग्रियों का उपयोग करके परमाणु हथियार हासिल किए, जो परमाणु ऊर्जा कार्यक्रमों में अंतर्निहित प्रसार के ख़तरों को रेखांकित करता है।

केवल कुछ किलोग्राम अत्यधिक समृद्ध यूरेनियम या अलग किया गया प्लूटोनियम एक परमाणु बम बनाने के लिए पर्याप्त हैं। आज, वैश्विक भंडार में इन सामग्रियों के सैकड़ों टन मौजूद हैं, और अधिक का उत्पादन किया जा रहा है। निरस्त्रीकरण के सफल होने के लिए, इस समस्या का समाधान करना आवश्यक है।

सहभागी राष्ट्र

हालाँकि केवल नौ देशों के पास परमाणु हथियार हैं, ३० से अधिक अन्य देश उनके प्रतिधारण और संभावित उपयोग का समर्थन करते हैं, जिसमें एक सहयोगी के तथाकथित “परमाणु छत्र” से सुरक्षा का दावा भी करते हैं।

उदाहरण के लिए, उत्तरी अटलांटिक संधि संगठन (नाटो) के सभी सदस्यों ने सार्वजनिक रूप से परमाणु हथियारों का समर्थन किया है। कई देशों में – बेल्जियम, जर्मनी, इटली, नीदरलैंड और तुर्किये सहित – अमेरिकी परमाणु बमों को अपने क्षेत्रों में रखा गया है, और उन्हें गिराने के लिए आवश्यक विमान और कर्मियों की व्यवस्था की जाती है। बेलारूस ने रूस के साथ इसी तरह की मेजबानी की व्यवस्था की है।

कुछ राष्ट्र परमाणु निशाना लगाने के उद्देश्य से खुफिया जानकारी साझा करते हैं, या परमाणु-सशस्त्र जहाजों को अपने जलक्षेत्र से होकर अपने बंदरगाहों में लंगर डालने की अनुमति देते हैं, या परमाणु-सशस्त्र विमानों को अपने हवाई क्षेत्र में प्रवेश करने और अपने हवाई अड्डों पर ईंधन भरने की अनुमति देते हैं।

मिलीभगत के ऐसे सभी कृत्य परमाणु खतरों को बढ़ावा देते हैं और निरस्त्रीकरण के प्रयासों को कमजोर करते हैं।

जर्मनी में प्रदर्शनकारी एक सैन्य अड्डे की नाकाबंदी करते हुए जहां अमेरिकी परमाणु बम रखे गए हैं।
साभार: राल्फ श्लेसनर

बम के खिलाफ एक कलाकार प्रदर्शनी साभार: मिकी एनाग्रियस

उन्मूलन का पक्ष

मानवता को उस विनाशकारी, अपरिवर्तनीय नुकसान से बचाने के लिए जो परमाणु हथियार करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं, सरकारों को उन्हें खत्म करने के लिए तत्काल काम करना चाहिए।

हर जगह लोगों द्वारा उन्मूलन के आह्वान के जवाब में हजारों परमाणु हथियारों को पहले ही नष्ट किया जा चुका है। एक देश, दक्षिण अफ्रीका ने अपने परमाणु हथियारों को पूरी तरह से समाप्त कर दिया है; अन्य दर्जनों ने उन्हें हासिल करने की योजना छोड़ दी है।

शीत युद्ध के चरम पर, लगभग 70,000 परमाणु हथियार थे, और वैश्विक भंडार में सन् 1980 के दशक के मध्य से सन् 2000 के दशक की शुरुआत तक बड़े पैमाने पर कटौती की गई।

हालाँकि, हाल ही में, इन हथियारों को नष्ट करने के कार्यक्रम ठप्प हो गए हैं, और कुछ परमाणु-सशस्त्र देश अब अभूतपूर्व दर पर अपने शस्त्रागारों का विस्तार कर रहे हैं। उनमें से किसी ने भी पूर्ण निरस्त्रीकरण की कोई योजना तैयार नहीं की है।

लेकिन दुनिया के अधिकांश राष्ट्र परमाणु हथियारों के कट्टर विरोधी बने हुए हैं और वे बिना किसी देरी के इनके उन्मूलन की मांग करते हैं।

इन हथियारों के प्रसार को अधिक देशों तक रोकना, या उन परिस्थितियों पर सीमाएं लगाना जिनमें उनका उपयोग किया जा सकता है, पर्याप्त नहीं है। हमारे ग्रह पर जीवन के लिए उनके द्वारा उत्पन्न खतरे की गंभीरता को देखते हुए, उन्मूलन ही एकमात्र समाधान है।

अनैतिक, अवैध और अलोकतांत्रिक

परमाणु हथियार बड़े पैमाने पर मृत्यु और विनाश फैलाते हैं, और मानवता के अस्तित्व को ही खतरे में डाल देते हैं। सैकड़ों हजारों लोगों की बेरहमी से हत्या और अंग-भंग करना नैतिक रूप से कभी भी उचित नहीं ठहराया जा सकता।

परमाणु हथियारों का कोई भी उपयोग अंतरराष्ट्रीय कानून का उल्लंघन होगा और उच्चतम स्तर का युद्ध अपराध माना जाएगा। विनाशकारी प्रभाव वाले हथियार कभी भी वैध सैन्य या रणनीतिक उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकते हैं।

दुनिया भर में, परमाणु-सशस्त्र देशों सहित, जनमत सर्वेक्षण उन्मूलन के लिए मजबूत जन समर्थन का संकेत देते हैं। जो सरकारें परमाणु शस्त्रागार विकसित करना जारी रखती हैं, वे अपने नागरिकों की इच्छा – और सर्वोत्तम हितों – के विपरीत कार्य कर रही हैं।

इन सबसे भयानक हथियारों के उन्मूलन से हर जगह हर कोई लाभान्वित होगा।

परमाणु निवारण

परमाणु-सशस्त्र देश अक्सर परमाणु शस्त्रागार बनाए रखने को उचित ठहराने के लिए "परमाणु निवारण" के सिद्धांत का आह्वान करते हैं। उनका तर्क है कि उनके हथियार पूरी तरह से अन्य देशों को परमाणु हमला शुरू करने से रोकने के उद्देश्य से हैं, और इस प्रकार से वे शांति और स्थिरता में योगदान करते हैं।

हालांकि, अधिकांश देश इस तर्क को खारिज करते हैं और परमाणु निवारण को सुरक्षा के लिए एक ख़तरनाक, भ्रामक और अस्थिर दृष्टिकोण मानते हैं। इसके अलावा, यह स्वाभाविक रूप से आक्रामक है, क्योंकि यह बड़े पैमाने पर मौत और विनाश पहुँचाने की निरंतर, विश्वसनीय धमकी पर निर्भर करता है।

निवारण समर्थकों के दावों के विपरीत, दुनिया में परमाणु हथियारों के अस्तित्व ने संघर्षों को नहीं रोका है, जिसमें परमाणु-सशस्त्र देशों के खिलाफ आक्रामकता कृत्य भी शामिल हैं। वास्तव में, परमाणु हथियारों ने तनाव को बढ़ाकर और जबरदस्ती और ब्लैकमेल को सक्षम करके युद्धों और टकरावों की संभावना को और बढ़ा दिया है।

निवारण सिद्धांत बताता है कि परमाणु हथियार सुरक्षा का एक वैध और वांछनीय स्रोत हैं। यह प्रसार को प्रोत्साहित करता है और निरस्त्रीकरण में बाधा डालता है।

उपयोग का बढ़ता जोखिम

आज किसी परमाणु हथियार के इस्तेमाल का जोखिम, चाहे दुर्घटनावश हो या जानबूझकर, उतना ही अधिक है जितना पहले कभी था – और यह केवल बढ़ता हुआ प्रतीत होता है।

यह गंभीर अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा वातावरण, परमाणु-सशस्त्र राष्ट्रों के बीच बढ़े हुए तनाव, उनकी परमाणु शतियों का संवर्धन, और अंतरराष्ट्रीय मानदंडों और संस्थानों के क्षरण जैसे कारकों के कारण है।

सैन्य क्षेत्र में आक्रामक साइबर-क्षमताओं, स्वायत्त प्रौद्योगिकियों और कृत्रिम बुद्धिमत्ता की खोज खतरे को और भी बड़ा बना देती है।

आने वाले हमले की चेतावनी के कुछ ही मिनटों के भीतर उपयोग के लिए तैयार – परमाणु हथियारों को उच्च सतर्कता (हाई अलर्ट) पर रखना – एक विशेष रूप से खतरनाक प्रथा है। एक बार परमाणु हथियारों से युक्त मिसाइल प्रक्षेपण होने के बाद, इसे वापस नहीं बुलाया जा सकता है। इसे अपने लक्ष्य तक पहुँचाना ही होता है, भले ही प्रक्षेपण झूठी जानकारी पर आधारित हो।

युद्ध के कोहरे में, नेता अतार्किक और अप्रत्याशित रूप से कार्य करने के लिए प्रवृत्त होते हैं। तनावपूर्ण, अव्यवस्थित स्थितियों में ग़लतफ़हमी की संभावना विशेष रूप से अधिक होती है।

यह अनुमान लगाना बहुत आसान है कि कैसे घबराहट या क्रूरता का क्षण, आहत अहंकार या गलत संचार, वैश्विक तबाही का कारण बन सकता है, क्योंकि परमाणु तबाही को उजागर करने की विशाल शक्ति केवल कुछ व्यक्तियों में निहित होती है।

शीत युद्ध के दौरान कई मौकों पर, दुनिया एक पूर्ण पैमाने पर परमाणु युद्ध का अनुभव करने के बेहद करीब आ गई थी। सबसे कुख्यात घटना सन् 1962 का क्यूबा मिसाइल संकट था जिसमें संयुक्त राज्य अमेरिका और सोवियत संघ शामिल थे।

यह तथ्य कि सन् 1945 के बाद से किसी युद्ध में परमाणु हथियारों का उपयोग न होना अच्छे प्रबंधन की बजाए अच्छी किस्मत का नतीजा है। और देर-सवेर, किस्मत हमारे नहीं होगी – जब तक कि इस ख़तरे को खत्म करने के लिए प्रभावी कार्रवाई नहीं की जाती।

दुर्घटनाएँ और त्रुटियाँ

न केवल परमाणु हथियारों के जानबूझकर उपयोग का ख़तरा है बल्कि मानवीय त्रुटि, तकनीकी खराबी, साइबर-हमले, गलत चेतावनियों या कमांड और नियंत्रण प्रणालियों तक अनधिकृत पहुंच के परिणामस्वरूप भी उनमें विस्फोट हो सकता है।

सन् 1945 के बाद से परमाणु हथियारों से जुड़ी कई दुर्घटनाएँ, साथ ही वे घटनाएँ जहाँ वे त्रुटियों के कारण लगभग उपयोग किए गए थे, अनपेक्षित आपदा की खतरनाक संभावना को प्रदर्शित करते हैं।

उदाहरण के लिए, सन् 1968 में, चार परमाणु बम ले जा रहा एक अमेरिकी विमान ग्रीनलैंड के पास आग लगने के कारण दुर्घटनाग्रस्त हो गया, और आसपास के क्षेत्र को प्लूटोनियम से दूषित कर दिया। हालांकि विस्फोट हुए, सौभाग्यवश, कोई परमाणु श्रृंखला अभिक्रिया शुरू नहीं हुई।

सन् 1995 में, रूसी अधिकारियों ने एक नॉर्वेजियन वैज्ञानिक रॉकेट के प्रक्षेपण को अमेरिकी पनडुब्बी से प्रक्षेपित बैलिस्टिक मिसाइल समझ लिया था। रूसी राष्ट्रपति ने जवाबी हमले के लिए प्रक्षेपण कोड प्राप्त किए लेकिन अंततः यह पता चला कि यह एक ग़लत संकेत था।

अन्य बेहद चिंताजनक घटनाओं में समुद्र में परमाणु हथियारों का खो जाना, परमाणु-सशस्त्र पनडुब्बियों की टक्कर, उड़ते हंसों और बादलों से परावर्तित प्रकाश को परमाणु-युक्त मिसाइलें समझ लेना, तथा एक परिचालन कंप्यूटर में प्रशिक्षण टेपों का अनजाने में डाला जाना शामिल हैं, जिसने एक आने वाले परमाणु हमले का अनुकरण किया।

सन् 1961 में, जब एक बमवर्षक का एक पंख टूट गया, तो अमेरिकी राज्य उत्तरी कैरोलिना में दो परमाणु बम जमीन पर गिर गए। "संयोग के सबसे मामूली अंतर से, शाब्दिक रूप से दो तारों के आपस में न जुड़ने की विफलता से, एक परमाणु विस्फोट टल गया," उस समय के अमेरिकी रक्षा सचिव रॉबर्ट मैकनमारा ने कहा। साभार: अमेरिकी सरकार

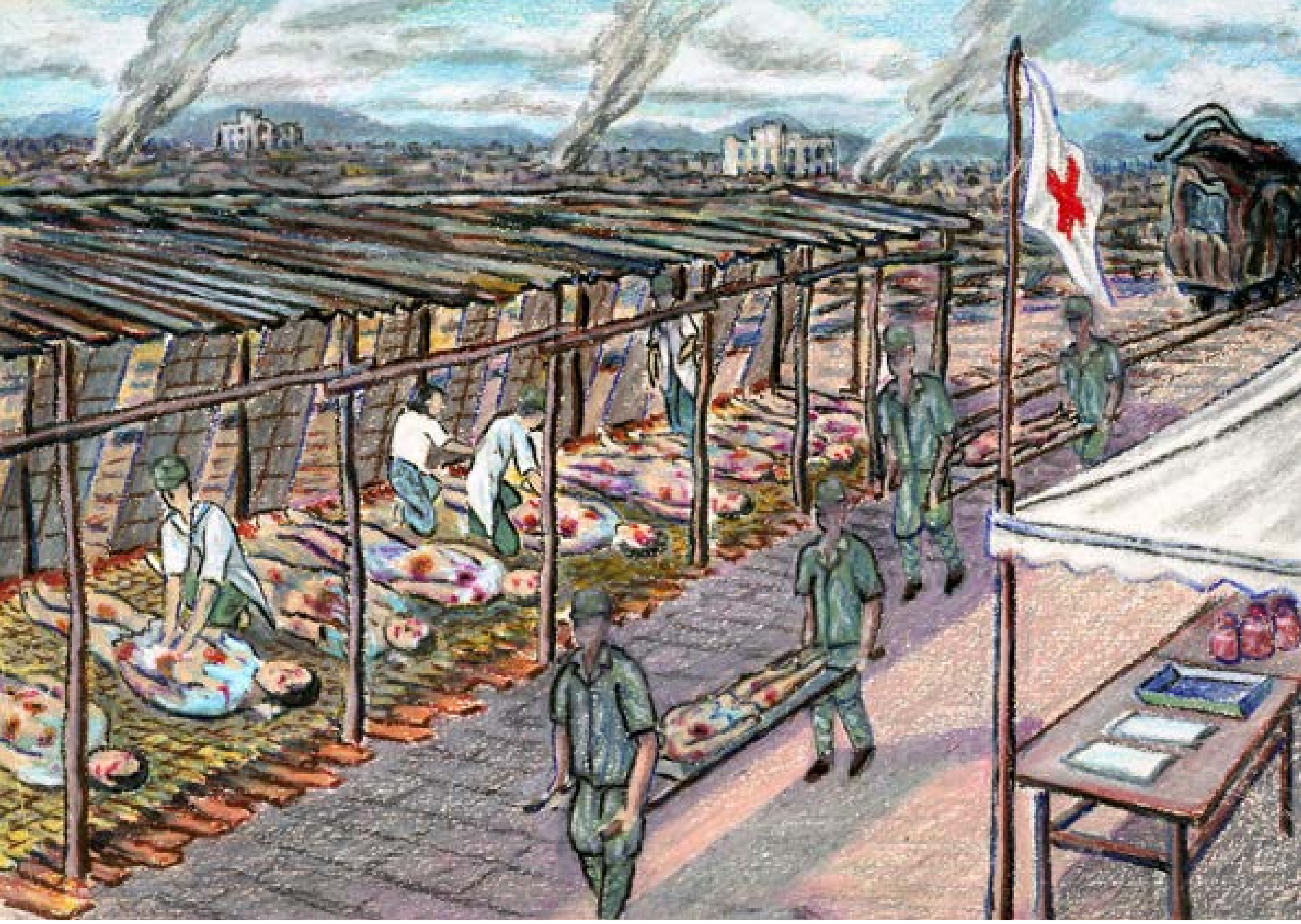

सन् 1945 में एक राहत केंद्र का एक हिरोशिमा से बचे व्यक्ति द्वारा किया गया चित्रण। घायल एक के बाद एक मरते गए। साभार: फुमिको यामाओका

मानवीय प्रतिक्रिया का अभाव

दुनिया में कहीं भी एक भी परमाणु हथियार का उपयोग स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे को कुचल देगा, जिससे एक प्रभावी मानवीय प्रतिक्रिया असंभव हो जाएगी।

अस्पताल और औषधालय, अग्निशमन उपकरण, संचार और परिवहन प्रणाली – सब किलोमीटर तक फैले पूर्ण विनाश के क्षेत्र में मलबे में तब्दील हो जाएंगे।

बीमार और घायल लोगों को राहत देने का प्रयास करने वाले उच्च स्तर की रेडियोधर्मिता के संपर्क में आएंगे, जिससे उनकी अपनी जान जोखिम में पड़ जाएगी।

रेड क्रॉस की अंतर्राष्ट्रीय समिति ने बार-बार चेतावनी दी है कि एक भी परमाणु हथियार के उपयोग की स्थिति में कोई पर्याप्त प्रतिक्रिया क्षमता नहीं है, पूर्ण पैमाने पर परमाणु युद्ध तो दूर की बात है, और ऐसी कोई क्षमता कभी विकसित नहीं की जा सकती है।

इसी तरह, विश्व स्वास्थ्य संगठन ने निष्कर्ष निकाला है: “दुनिया में चिकित्सा सेवाओं का जो भी हिस्सा बचा है, वह आपदा को किसी भी महत्वपूर्ण रूप से कम नहीं कर सकता है।”

क्या बंकर मददगार हो सकते हैं?

अधिक परमाणु बंकर या फ़ॉलआउट आश्रय बनाना, समाधान नहीं है। शीत युद्ध के दौरान लोकप्रिय, वे नागरिकों को परमाणु युद्ध में जीवित रहने के बारे में सुरक्षा का मिथ्याबोध देते हैं।

परमाणु हमले की स्थिति में, अग्रिम चेतावनी मिलने की संभावना नहीं होती है, इसलिए छिपने का कोई अवसर नहीं होगा।

इसके अलावा, ग्राउंड ज़ीरो के करीब के कई बंकर भट्टियाँ बन जाएँगे, जिससे अंदर मौजूद सभी लोग मारे जाएँगे। कुछ परमाणु हथियार विशेष रूप से बंकरों को नष्ट करने के लिए पृथ्वी की गहराई में प्रवेश करने के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।

जो लोग समय पर बंकर खोजने और अंदर जीवित रहने में कामयाब रहे, उन्हें बाहर निकलने पर एक खतरनाक, रेडियोधर्मी नरक का सामना करना पड़ेगा, जिसमें बचाए जाने की बहुत कम संभावना होगी।

यूनाइटेड किंगडम में निर्माणाधीन एक परमाणु-सशस्त्र पनडुब्बी। साभार: यूके सरकार

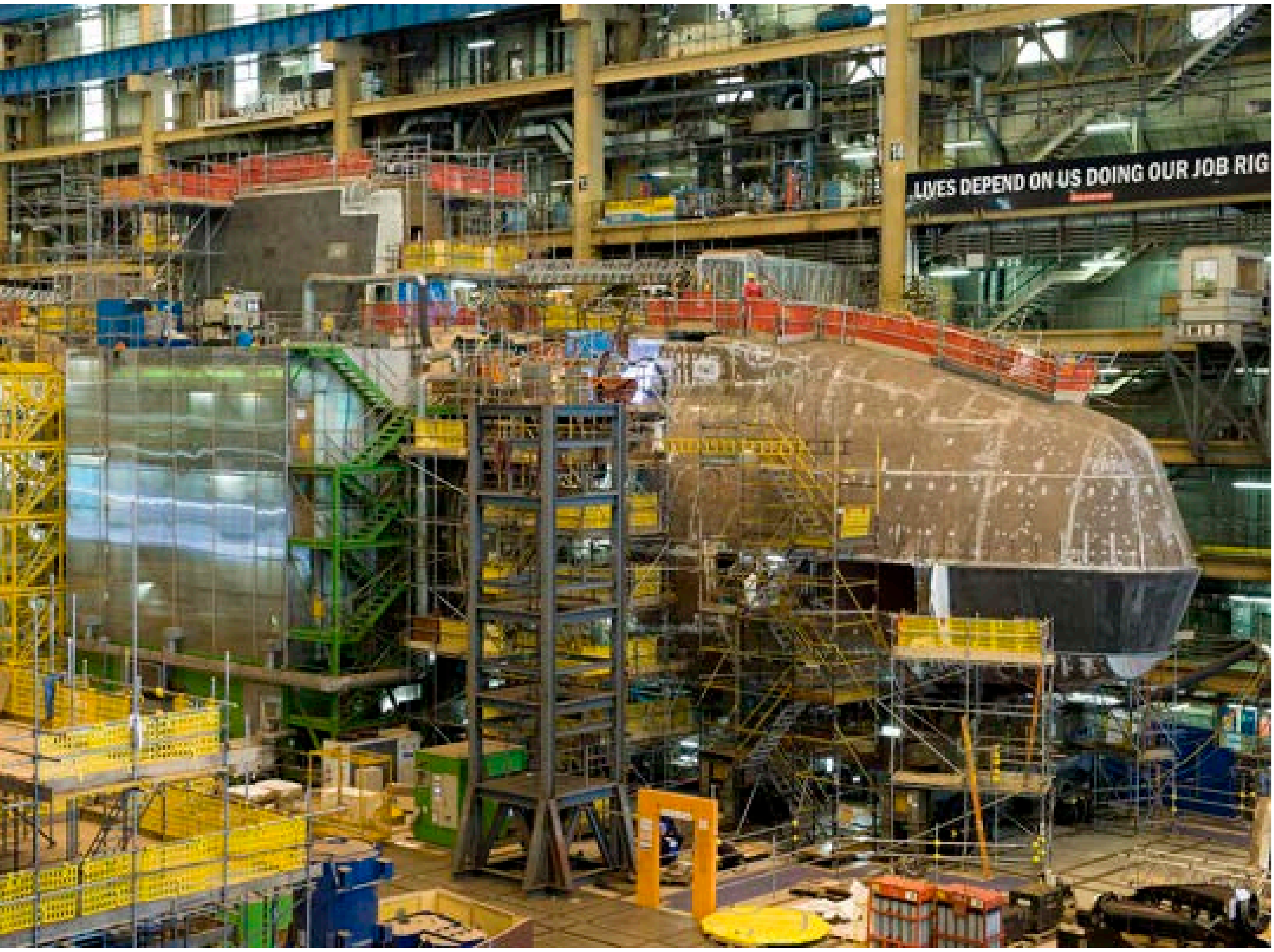

संसाधनों की बर्बादी

हर साल, परमाणु-सशस्त्र देश अपने परमाणु शक्तियों को बढ़ाने और विस्तारित करने में अरबों डॉलर खर्च करते हैं – यह पैसा जिसे स्वास्थ्य, शिक्षा, गरीबी उन्मूलन और जलवायु संकट के समाधान की कार्रवाई में निवेश किया जा सकता है।

कुछ देशों में, कंपनियाँ परमाणु हथियारों के विकास और उत्पादन का समर्थन करके बड़े मुनाफ़े कमाती हैं। विचार मंच (थिंक-टैंक) और विश्वविद्यालय भी इसमें शामिल हैं और आर्थिक रूप से लाभान्वित होते हैं।

इस जानलेवा काम को समाप्त करने से अन्य उद्देश्यों के लिए संसाधन उपलब्ध होंगे और कुछ सबसे प्रतिभाशाली वैज्ञानिक दिमाग एक अधिक शांतिपूर्ण दुनिया बनाने में योगदान दे सकेंगे – बजाय इसके कि वे अपनी सेनाओं की बड़े पैमाने पर मारने और नष्ट करने की क्षमता को परिपूर्ण करने में लगे रहें।

शांति में एक बाधा

परमाणु हथियार आज की किसी भी सुरक्षा चुनौती का समाधान नहीं करते। इसके विपरीत, वे कई चुनौतियों को और भी गंभीर बना देते हैं या उनका मुख्य कारण होते हैं।

परमाणु निरस्त्रीकरण से राष्ट्रों के बीच अधिक सौहार्दपूर्ण संबंध स्थापित होंगे और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के अवसर बढ़ेंगे, जिससे सब लोगों को लाभ होगा – विशेष रूप से उन देशों में भी जो वर्तमान में परमाणु हथियारों से लैस हैं।

यह राष्ट्रीय और सामूहिक सुरक्षा हितों दोनों की सेवा करने वाला सर्वोच्च स्तर के वैश्विक सार्वजनिक हित में होगा।

लैंगिक दृष्टिकोण

परमाणु हथियारों का उपयोग करने की इच्छा व्यक्त करने वाले नेताओं को अक्सर मर्दाना, मजबूत और निर्णायक के रूप में सराहा जाता है, जबकि निरस्त्रीकरण का समर्थन करने वालों को नारीचित, कमजोर और भावनात्मक कहकर खारिज कर दिया जाता है।

इसके अलावा, परमाणु हथियारों के बारे में सार्वजनिक बहस और निर्णय लेने में पुरुषों का प्रभुत्व रहता है।

इन धारणाओं को सक्रिय रूप से चुनौती देने और अधिक लैंगिक विविधता और समावेशन सुनिश्चित करना निरस्त्रीकरण में सफलता की संभावनाओं को बेहतर बनाएगा।

“जनवरी 2021 में परमाणु हथियार निषेध संधि का लागू होना एक असाधारण उपलब्धि थी और परमाणु हथियारों के उन्मूलन की दिशा में एक कदम था।”

– एंतोनियो गुटेरेस, संयुक्त राष्ट्र महासचिव, 2021

सन् 2017 में TPNW के लिए एक उच्च-स्तरीय हस्ताक्षर समारोह। साभार: संयुक्त राष्ट्र फोटो

परमाणु हथियारों पर प्रतिबंध

सन् 2017 में, अंतर्राष्ट्रीय परमाणु हथियार उन्मूलन अभियान (ICAN) और उसके सहयोगियों द्वारा एक दशक के पक्षसमर्थन के बाद, 122 देशों ने दुनिया के सबसे भयानक हथियारों पर प्रतिबंध लगाने वाली एक ऐतिहासिक संधि को अपनाने के लिए मतदान किया, जिसे परमाणु हथियार निषेध संधि (TPNW) के रूप में जाना जाता है। यह संधि सन् 2021 में लागू हुई।

उस समय तक, परमाणु हथियार ही सामूहिक विनाश के ऐसे एकमात्र हथियार थे जिन पर व्यापक, विश्व स्तर पर लागू प्रतिबंध के अधीन नहीं थे। इस प्रकार, इस नई संधि ने अंतर्राष्ट्रीय कानून में एक बड़ी कमी को पूरा किया।

यह परमाणु हथियारों से मानव अस्तित्व, पर्यावरण, सामाजिक-आर्थिक विकास, वैश्विक अर्थव्यवस्था, खाद्य सुरक्षा, और वर्तमान और भविष्य की पीढ़ियों के स्वास्थ्य और कल्याण के लिए बढ़ते खतरे पर गहरी चिंता से उत्पन्न हुआ था।

यह न केवल परमाणु हथियारों को पूरी तरह से प्रतिबंधित करने वाली पहली बहुपक्षीय संधि है, बल्कि वह संधि भी है जो परमाणु हथियारों को सत्यापित रूप से समाप्त करने की रूपरेखा स्थापित करती है और उनके उपयोग एवं परीक्षण के पीड़ितों की सहायता करती है।

हालाँकि आज तक कोई भी परमाणु-हथियार संपन्न देश TPNW में शामिल नहीं हुआ है, यह परमाणु हथियारों के उपयोग के खिलाफ वैश्विक वर्जना को मजबूत करने और निरस्त्रीकरण के लिए लंबे समय से प्रतीक्षित कार्रवाई को प्रोत्साहित करने के लिए एक अपरिहार्य कदम है।

इतिहास ने दिखाया है कि कुछ हथियारों का निषेध उनके उन्मूलन की दिशा में प्रगति को सुगम बनाता है। जिन हथियारों को गैरकानूनी घोषित कर दिया गया है, उन्हें तेजी से अवैध माना जाता है, जिससे उनकी राजनीतिक स्थिति कमज़ोर हो जाती है और इसके साथ ही, उनके उत्पादन के लिए संसाधन अनुपलब्ध हो जाते हैं।

जैसे-जैसे समय के साथ अधिक से अधिक देश TPNW में शामिल होंगे, इसके मानदंड मजबूत होंगे, और परमाणु-सशस्त्र देशों पर उनके अनुरूप होने का दबाव तेज हो जाएगा। अब तक, दुनिया के आधे से अधिक देश इस संधि में शामिल हो चुके हैं।

यह एक ऐसी दुनिया के लिए एक शक्तिशाली विकल्प प्रदान करता है जिसमें सामूहिक विनाश के खतरों को हावी होने दिया जाता है। यह खतरनाक संकट के समय में आगे बढ़ने का मार्ग प्रस्तुत करता है।

TPNW के मुख्य प्रावधान

निषेध

TPNW देशों को कभी भी परमाणु हथियारों को विकसित करने, परीक्षण करने, उत्पादन करने, प्राप्त करने, भंडारण करने, स्थानांतरित करने, उपयोग करने या उपयोग करने की धमकी देने से रोकता है। उन पर अपने क्षेत्र में किसी अन्य राष्ट्र के परमाणु हथियारों को अपने क्षेत्र में रखने, या संधि द्वारा निषिद्ध गतिविधियों में संलग्न होने के लिए दूसरों की सहायता या प्रोत्साहन करने से भी प्रतिबंधित किया गया है।

उन्मूलन की रूपरेखा

यह संधि परमाणु हथियार कार्यक्रमों और संबंधित सुविधाओं के सत्यापनीय और अपरिवर्तनीय उन्मूलन के लिए एक कानूनी ढांचा स्थापित करती है। इसमें शामिल होने वाले परमाणु-सशस्त्र राष्ट्र को तुरंत अपने परमाणु हथियारों को परिचालन स्थिति से हटाना होगा और उन्हें 10 साल की समय-सीमा के भीतर, एक समझौता-वार्ता से तय, समयबद्ध योजना के अनुसार नष्ट करना होगा। कोई देश संधि में शामिल होने से पहले भी अपने परमाणु हथियारों को नष्ट कर सकता है और एक नामित अंतरराष्ट्रीय प्राधिकरण द्वारा इसकी पुष्टि करवा सकता है।

पीड़ितों की सहायता और पर्यावरणीय उपचार

इस संधि के लिए देशों को चिकित्सा देखभाल, पुनर्वास और मनोवैज्ञानिक समर्थन सहित परमाणु हथियारों के उपयोग और परीक्षण के पीड़ितों की सहायता करने की आवश्यकता है। उन्हें परमाणु विस्फोटों से विकिरण से दूषित क्षेत्रों के उपचार की दिशा में भी उपाय करने चाहिए। इन प्रावधानों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहयोग महत्वपूर्ण है।

अन्य संधियों के साथ संबंध

TPNW परमाणु हथियारों से संबंधित पिछली संधियों को सुदृढ़ करता है, जिसमें सन् 1968 की परमाणु अप्रसार संधि शामिल है, जिसका उद्देश्य परमाणु हथियारों वाले देशों की संख्या को सीमित करना और निरस्त्रीकरण के लक्ष्य को आगे बढ़ाना है।

जैसा कि सन् 1996 में अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय द्वारा बताया गया था कि देशों का कानूनी दायित्व है कि वे “परमाणु निरस्त्रीकरण की ओर ले जाने वाली समझौता-वार्ताओं को सद्भावनापूर्वक आगे बढ़ाएं और उन्हें एक निष्कर्ष तक पहुंचाएं”। इस दिशा में प्रगति की कमी ही TPNW पर समझौता-वार्ता के लिए एक प्रमुख प्रेरणा थी।

अन्य पूरक संधियों में सन् 1996 की व्यापक परमाणु-परीक्षण-प्रतिबंध संधि और लैटिन अमेरिका और कैरिबियन, दक्षिण प्रशांत, अफ्रीका, दक्षिण पूर्व एशिया और मध्य एशिया में परमाणु-हथियार-मुक्त क्षेत्र स्थापित करने वाली क्षेत्रीय संधियाँ शामिल हैं।

TPNW अंतरराष्ट्रीय मानवीय कानून नामक कानूनी व्यवस्था पर आधारित है, जो युद्ध के तरीकों और साधनों को सीमित करता है। सशस्त्र संघर्ष के पक्षों को नागरिकों और सैनिकों के बीच अंतर करने में असमर्थ हथियारों, या अनावश्यक चोट या अनावश्यक पीड़ा देने वाले हथियारों का उपयोग करने से बचना चाहिए।

प्रतिबंधित हथियार

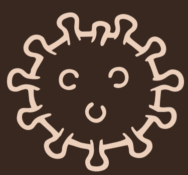

जैविक हथियार
– 1972 में प्रतिबंधित

क्लस्टर युद्ध सामग्री
– 2008 में प्रतिबंधित

रासायनिक हथियार
– 1993 में प्रतिबंधित

परमाणु हथियार
– 2017 में प्रतिबंधित

व्यक्ति विरोधी खदानें
– 1997 में प्रतिबंधित

सन् 2025 में न्यूयॉर्क में TPNW के सदस्यों की एक बैठक। साभार: ICAN

और देशों को सम्मिलित करना

कोई भी देश किसी भी समय TPNW में शामिल हो सकता है। जो देश वर्तमान में ऐसा करने से कतरा रहे हैं, वे अपनी स्थिति का पुनर्मूल्यांकन कर सकते हैं जब संधि की सदस्यता बढ़ती जाती है और उनके नागरिकों की मांगें तेज हो जाती हैं।

अतीत में अन्य संधियों के लिए भी ऐसा ही हुआ है। उदाहरण के लिए, जब अप्रसार संधि पर समझौता-वार्ता हो रही थी फ्रांस और चीन ने इसका विरोध किया था, लेकिन दशकों बाद इसमें शामिल होने के लिए मजबूर होना पड़ा।

दुनिया तेजी से बदल रही है, और आज के नेता हमेशा सत्ता में नहीं रहेंगे। भविष्य की सरकारें संधि के गुणों को स्वीकार कर सकती हैं जिन्हें वर्तमान सरकारें नहीं करती हैं।

TPNW में शामिल हुए राष्ट्रों को दूसरों को भी इसमें शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करना आवश्यक है, जिसका अंतिम लक्ष्य "सार्वभौमिक अनुपालन" है।

संधि में शामिल होना एक स्पष्ट संदेश भेजता है कि परमाणु हथियार अस्वीकार्य हैं और इन्हें समाप्त किया जाना चाहिए। बढ़ते परमाणु खतरों के समय, यह सबसे भयानक हथियारों को खत्म करने की सर्वोत्तम आशा प्रदान करता है।

“आइए अब इस संधि द्वारा हमें प्रदान किए गए अनूठे अवसरों का लाभ उठाएँ और परमाणु हथियारों के युग को समाप्त करें।”

– रेड क्रॉस की अंतर्राष्ट्रीय समिति, 2020

निरस्त्रीकरण करने वाले: दक्षिण अफ्रीका और कज़ाख़िस्तान

TPNW के दो प्रमुख समर्थकों, दक्षिण अफ्रीका और कज़ाख़िस्तान ने पिछले कार्यों के माध्यम से दिखाया है कि परमाणु निरस्त्रीकरण संभव है।

सन् 1991 में सोवियत संघ के पतन के बाद जब कज़ाख़िस्तान ने अपनी स्वतंत्रता प्राप्त की, तो उसके क्षेत्र में 1,400 से अधिक परमाणु हथियार मौजूद थे। उसने इन्हें सभी त्यागने का निर्णय लिया, यह मानते हुए कि उसकी सुरक्षा सर्वोत्तम रूप से निरस्त्रीकरण के माध्यम से ही सुनिश्चित होती है।

दक्षिण अफ्रीका 1990 के दशक की शुरुआत में रंगभेद युग के अंत में इसी निष्कर्ष पर पहुंचा। उसने स्वेच्छा से परमाणु बमों के अपने पूरे शस्त्रागार को नष्ट कर दिया – एक कार्य जिसे बाद में अंतर्राष्ट्रीय परमाणु ऊर्जा एजेंसी द्वारा सत्यापित किया गया।

दोनों देशों के नेताओं ने परमाणु-शस्त्र-मुक्त दुनिया हासिल करने में अपने योगदान पर अत्यधिक गर्व व्यक्त किया है और दूसरों से भी ऐसा ही करने का आग्रह किया है।

दक्षिण अफ्रीका के परमाणु बमों के आवरण।

हिरोशिमा में छात्रों के साथ
एक कार्रवाई।
साभार: ताकेओ नाकाओकु

ICAN दुनिया भर के सांसदों
का सम्मेलन।
साभार: डेरेक फ्रेंच

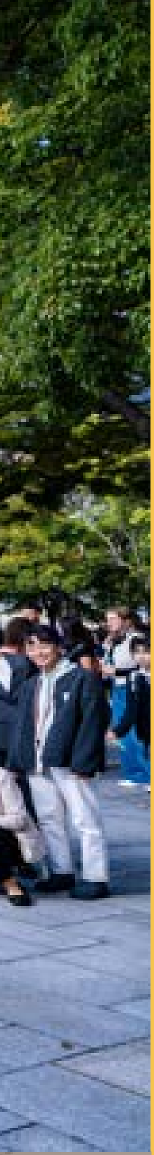

उन्मूलन के लिए कार्रवाई

परमाणु हथियार मानव हाथों से बनाए गए थे और मानव हाथों से ही नष्ट किए जा सकते हैं। इसमें कोई तकनीकी बाधा नहीं है, केवल राजनीतिक बाधाएं हैं। हज़ारों परमाणु हथियार पहले ही नष्ट किए जा चुके हैं।

नेतृत्व और राजनीतिक इच्छाशक्ति के साथ, निरस्त्रीकरण की दिशा में और अधिक प्रगति बहुत तेज़ी से हासिल की जा सकती है। यह तथ्य कि बड़े भौगोलिक क्षेत्रों को पहले ही परमाणु हथियारों से मुक्त घोषित किया जा चुका है, यह दर्शाता है कि एक दिन पूरी दुनिया भी ऐसी हो सकती है।

ऐतिहासिक रूप से, परमाणु हथियार नियंत्रण के क्षेत्र में कुछ सबसे बड़े सफल परिणाम उच्च अंतर्राष्ट्रीय तनाव के समय प्राप्त किए गए थे। एक संकट नेताओं के विचारों को केंद्रित कर सकता है और उन्हें आगे बढ़ने के लिए नए रास्ते तलाशने के लिए मजबूर कर सकता है।

लेकिन प्रगति हमेशा बदलाव के लिए एक शक्तिशाली ज़मीनी स्तर के आंदोलन पर निर्भर करेगी, जिसमें जीवन के सभी क्षेत्रों के संबंधित नागरिक शामिल होंगे। परमाणु हथियारों के उपयोग के खिलाफ आज जो मजबूत, स्थायी वैश्विक आवर्जना मौजूद है, वह दशकों के लोकप्रिय प्रतिरोध का परिणाम है।

दुनिया के सबसे भयानक हथियारों को खत्म करने के कारण में लोग कई तरह से योगदान दे सकते हैं। उनमें से कुछ यहां दिए गए हैं:

शिक्षित करें

परमाणु हथियारों के उन्मूलन की तात्कालिकता के बारे में दोस्तों, परिवार के सदस्यों और सहकर्मियों के साथ जानकारी साझा करें। संपादक को लेख और पत्र लिखें, सोशल मीडिया पर पोस्ट करें, और सार्वजनिक मंच, शिक्षण सत्र और फिल्म प्रदर्शन का आयोजन करें।

परमाणु हथियारों से मनुष्य और पर्यावरण पर होने वाले नुकसान के प्रति जागरूकता बढ़ाना विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। अक्सर परमाणु हथियारों के बारे में शिक्षा उन लोगों पर केंद्रित होती है जिन्होंने 1945 में इन हथियारों का अविष्कार किया और उनका प्रयोग किया।

हिरोशिमा और नागासाकी के हादसे से जीवित बचे लोगों, और परमाणु परीक्षण से प्रभावित लोगों की अनुभवों की गवाहियाँ दृष्टिकोण बदलने और कार्रवाई को प्रेरित करने में मदद कर सकती है।

कागज़ी हंस

जापान में, कागज़ी हंस पारंपरिक रूप से अच्छे स्वास्थ्य और दीर्घायु का प्रतीक माने जाते हैं। आज इन्हें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर शांति का प्रतीक भी माना जाता है, और इनका उपयोग परमाणु हथियारों के उन्मूलन की तत्काल आवश्यकता पर महत्वपूर्ण चर्चाओं को आरंभ करने के लिए किया जा सकता है।

सदाको सासाकी जब दो साल की बच्ची थी वह हिरोशिमा बम से निकालने वाले विकिरण के संपर्क में आ गई थी। वर्षों बाद, उसे ल्यूकेमिया (विकिरण का विलंबित प्रभाव) का निदान किया गया – और उसने अस्पताल में रहते हुए एक हजार कागज़ी हंस बनाने का लक्ष्य रखा, इस उम्मीद में कि इससे उसका स्वास्थ्य अच्छा स्वास्थ्य होगा।

उसने दृढ़ता दिखाई और अपना लक्ष्य हासिल किया, लेकिन दुखद रूप से वह दिन-ब-दिन कमजोर होती गई और 12 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई।

तब से, पूरे जापान और दुनिया भर के बच्चों ने परमाणु हथियारों के उन्मूलन के लिए अपना समर्थन दिखाने के लिए कागज़ी हंस बनाए हैं।

क्यों न आप अपने देश के निर्वाचित प्रतिनिधियों को कागज़ी हंस डाक द्वारा भेजें या हाथ में सौंपें। साथ में एक पत्र में उनसे परमाणु हथियार निषेध संधि के लिए समर्थन का अनुरोध करें?

समर्थन करें

परमाणु हथियारों के पूर्ण उन्मूलन के लिए उनका समर्थन लेने के लिए अपने देश के निर्णयकर्ताओं को लिखें, फोन करें या उनसे मिलें।

सन् 2017 से, अलग अलग राजनीतिक सोच वाले हजारों सांसदों ने चिंतित नागरिकों की मांगों का जवाब दिया है और परमाणु हथियार निषेध संधि का पालन बढ़ावा देने के लिए ICAN प्रतिज्ञा (pledge.icanw.org) पर हस्ताक्षर किए हैं।

वाशिंगटन डी.सी. से लेकर पेरिस और सिडनी तक, सैकड़ों शहरों ने ICAN की अपील (cities.icanw.org) पर हस्ताक्षर करके इस संधि का औपचारिक रूप से समर्थन भी किया है।

अपनी आवाज़ उठाने के लिए आपको विशेषज्ञ होने की आवश्यकता नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि आप खतरे की गंभीरता और यह कदम उठाने की तात्कालिकता को पहचानें।

नागासाकी में एक स्मारक को सजाते हुए हजारों कागज़ी हंस। साभार: ICAN

विरोध करें

अहिंसक विरोध लोगों के लिए परमाणु हथियारों को अस्वीकार करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है। यह कई रूप ले सकता है, जैसे कि रैली, मार्च, नाकाबंदी और जागरण।

दशकों से, वैश्विक शांति और निरस्त्रीकरण आंदोलन के सदस्य इस उद्देश्य की ओर ध्यान आकर्षित करने के लिए बड़े और छोटे स्तर के विरोध प्रदर्शन आयोजित करते रहे हैं। अनगिनत प्रदर्शन उन स्थानों पर हुए हैं जहाँ परमाणु हथियार बनाए और तैनात किए जाते हैं, उनके विकास में शामिल विश्वविद्यालयों में, और राष्ट्रीय संसदों के बाहर भी।

निस्संदेह, बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शनों ने परमाणु परीक्षण को समाप्त करने, परमाणु शस्त्रागार के विस्तार को रोकने, सन् 1945 के बाद से युद्ध में परमाणु हथियारों के किसी भी उपयोग को रोकने और निरस्त्रीकरण के लिए दबाव बनाने में मदद की है।

आज और अधिक प्रत्यक्ष कार्रवाई की आवश्यकता है।

मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया में एक परमाणु-विरोधी कार्रवाई। साभार: जेसी बॉयलन

विनिवेश करें

कुछ परमाणु-सशस्त्र देशों में, कंपनियां परमाणु हथियारों और उनके घटकों के उत्पादन में शामिल हैं, और वित्तीय संस्थान इस काम को संभव बनाने के लिए पूंजी प्रदान करते हैं।

परमाणु हथियार उद्योग से विनिवेश निरस्त्रीकरण के लिए वित्तीय संस्थानों का एक ठोस योगदान है । परमाणु हथियार निषेध संधि के अनुरूप सैकड़ों संस्थान पहले ही ऐसा कर चुके हैं, जो परमाणु-हथियार-मुक्त वित्त के प्रति प्रतिबद्ध हैं (divest. icanw.org)।

लोग अपने बैंकों और पेंशन फंडों से संपर्क कर सकते हैं और इस बात पर जोर दे सकते हैं कि परमाणु हथियार कंपनियों को उनके निवेश से बाहर रखा जाए।

दान करें

जैसा कि संयुक्त राष्ट्र के पूर्व महासचिव बान की मून ने एक बार टिप्पणी की थी: "दुनिया अत्यधिक हथियारों से लैस है और शांति के लिए धन की कमी है।" अंतर्राष्ट्रीय परमाणु हथियार उन्मूलन अभियान (ICAN) को दान करके, आप इसे बदलने में मदद कर सकते हैं (icanw.org/donate)।

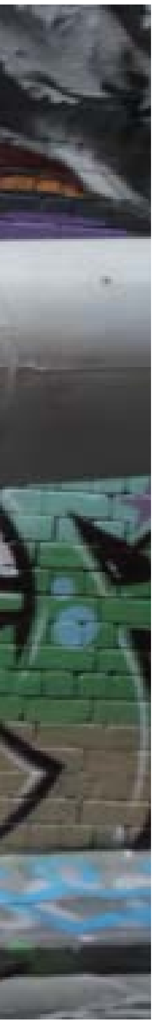

प्रभावी वकालत के सिद्ध ट्रैक रिकॉर्ड के साथ, सन् 2017 में नोबेल शांति पुरस्कार (Nobel Peace Prize) से मान्यता प्राप्त, ICAN विश्व स्तर पर परमाणु निरस्त्रीकरण पर प्रमुख नागरिक समाज की आवाज़ है। आपके समर्थन से, हम अभियान को पूरी दूरी तक ले जा सकते हैं: बिल्कुल शून्य परमाणु हथियारों तक।

ICAN वैश्विक स्तर पर परमाणु निरस्त्रीकरण पर नागरिक समाज की अग्रणी आवाज़ है, जिसे प्रभावी पक्ष समर्थन का अनुभव है और जिसे 2017 में नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। आपके समर्थन से हम इस अभियान का पूरा सफ़र तय कर सकते हैं: परमाणु हथियारों के उन्मूलन तक।

"हमें परमाणु हथियारों को गैरकानूनी घोषित करने और समाप्त करने के लिए एक दृढ़ विश्वव्यापी आंदोलन की आवश्यकता है। इस पीढ़ी में वहां तक पहुंचने के लिए, हमें जनमत की लहर को एक शक्तिशाली चरमोत्कर्ष में बदलना होगा: एक विशाल, उफनती, अजेय शक्ति जो हमें पूर्णतः शून्य परमाणु हथियारों तक ले जाए। इसके बिना, सबसे प्रेरणादायक नेता भी रास्ते में लड़खड़ा जाएंगे।"

– बिल विलियम्स, ICAN के सह-संस्थापक, 2006

जिनेवा में एक ICAN कार्रवाई। साभार: ऑडे कैटीमेल

अभियान के बारे में

अंतर्राष्ट्रीय परमाणु हथियार उन्मूलन अभियान (ICAN) गैर-सरकारी संगठनों का एक वैश्विक गठबंधन है जिसका एक सरल मिशन है: दुनिया के हर देश को ऐतिहासिक परमाणु हथियार निषेध संधि में शामिल होने और पूरी तरह से लागू करने के लिए राजी करना।

सन् 2007 में मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया में स्थापित, यह अभियान एक दशक पहले मानवीय आधार पर व्यक्ति-विरोधी खदानों को गैरकानूनी घोषित करने के सफल आंदोलन से प्रेरित था। आज, ICAN का मुख्यालय जिनेवा, स्विट्ज़रलैंड में है।

अपने गठन के समय से ही, ICAN ने परमाणु हथियारों के खिलाफ जनता में एक शक्तिशाली विरोध की लहर खड़ी करने पर ध्यान केंद्रित किया है, जिसमें हिरोशिमा और नागासाकी के परमाणु बम पीड़ितों और परमाणु परीक्षणों से प्रभावित लोगों की आवाज़ों को बुलंद करना शामिल है।

रेड क्रॉस की अंतर्राष्ट्रीय समिति, संयुक्त राष्ट्र सचिवालय और समान विचारधारा वाली सरकारों के साथ मिलकर, ICAN ने जागरूकता बढ़ाने वाले कार्यक्रम आयोजित किए हैं, अग्रणी शोध प्रकाशित किए हैं, वैश्विक कार्रवाई दिवस आयोजित किए हैं और वरिष्ठ निर्णयकर्ताओं के सामने उन्मूलन के पक्ष को रखा है।

नोबेल शांति पुरस्कार

सन् 2017 में, ICAN को "किसी भी परमाणु हथियार के उपयोग के विनाशकारी मानवीय परिणामों की ओर ध्यान आकर्षित करने के कार्य और ऐसे हथियारों के संधि-आधारित निषेध को प्राप्त करने के अपने अभूतपूर्व प्रयासों के लिए" नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

यह पुरस्कार दुनिया भर के उन अनगिनत प्रचारकों और नागरिकों के अथक प्रयासों को श्रद्धांजलि है, जिन्होंने परमाणु युग की शुरुआत से ही परमाणु हथियारों का कड़ा विरोध कर रहे हैं और उनकी स्थायी रूप से उन्मूलन की मांग कर रहे हैं।

यह कोई दूरव्यापी सपना नहीं, बल्कि एक तात्कालिक आवश्यकता है। आने वाली पीढ़ियाँ इस भयानक अभिशाप से मुक्त होकर ही पलें-बढें।

"यह हमारा दृढ़ विश्वास है कि ICAN ने पिछले वर्ष में, किसी भी अन्य अभियान की तुलना में, परमाणु हथियारों से मुक्त दुनिया प्राप्त करने के प्रयासों को एक नई दिशा और नया जोश दिया है।"

– नॉर्वेजियन नोबेल समिति, 2017

TPNW की मूल प्रति। साभार। साभार: ICAN

सेत्सुको थर्लो

एक 13 वर्षीय लड़की, सेत्सुको थर्लो हिरोशिमा पर गिराए गए परमाणु बम के विस्फोट से बेहोश हो गई थी। वह एक ढह चुकी इमारत के मलबे में फंस गई थी, लेकिन अंततः रेंग कर बाहर निकलने में सफल रही।

"उस इमारत में मेरे अधिकांश सहपाठी ज़िंदा जल गए," उसने याद किया। "मैंने अपने चारों ओर घोर, अकल्पनीय तबाही देखी... जले हुए मानव मांस की दुर्गंध हवा में फैली हुई थी।"

परमाणु युद्ध की भयावहता की एक जीवित गवाह, सेत्सुको ने सन् 2017 में ICAN को प्रदान किए गए नोबेल शांति पुरस्कार को संयुक्त रूप से स्वीकार किया। "हर दिन का हर सेकंड, परमाणु हथियार हमारे प्रियजनों और हमारे लिए महत्वपूर्ण हर चीज़ को खतरे में डाल देते हैं," उन्होंने चेतावनी दी।

"हमें अब इस पागलपन को बर्दाश्त नहीं करना चाहिए।"

उसने विश्व के नेताओं से हाल ही में अपनाई गई परमाणु हथियार निषेध संधि पर हस्ताक्षर करने का आग्रह किया। " आइए इसे परमाणु हथियारों के अंत की शुरुआत मानें," उन्होंने कहा। "इस संधि में शामिल हों; परमाणु विनाश के खतरे को हमेशा के लिए मिटा दें।"

सन् 2017 में नॉर्वे में नोबेल शांति पुरस्कार समारोह में सेत्सुको थर्लो। साभार: जो स्ट्रॉब

परमाणु हथियार मानव हाथों से
बनाए गए थे और मानव हाथों से
ही नष्ट किए जा सकते हैं।